मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग १

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(पहला भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ३०-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अ-नु-क्र-म

१ दो शब्द (पाँच)

२ श्रीशाबर-शक्ति-पाठ १-१५

अनन्त श्री विभूषित श्री दिव्येश्वर योगिराज श्रीशक्तिदत्त शिवेन्द्राचार्य विरचित

३ शाबर-मन्त्र-विज्ञान १६

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०, प्रयाग

४ शाबर-मन्त्र-साधना में गुरु-तत्त्व २३

(१ नव-नाथ-माला, २ नव-नाथ-स्वरूप, ३ नव-नाथ-चरित)

प० पू० श्री स्वामी हिमालय अरण्य जी की कृपा से प्राप्त

५ शाबर-मन्त्र-सप्तक ३१

श्री भैरवानन्दनाथ, सागर (म० प्र०)

(१ 'स्व-रक्षा' और 'शत्रु-त्रासन' हेतु श्रीवीर भैरौ मन्त्र, २ अर्श-नाशक मन्त्र, ३ भूत-प्रेत-नाशक श्री हनुमानजी का मन्त्र, ४ टिटनेस का मन्त्र, ५ अण्ड-वृद्धि, गर्भ गिराने, साँप भगाने और खेती सुखाने का मन्त्र, ६ वशी-करण मन्त्र, ७ वशीकरण मन्त्र)

६ कुबेर-भाण्डार (ऋद्धि-सिद्धि) गायत्री ३४

७ शाबर-मन्त्र-दशक ३५

गीता प्रचार भवन, दिल्ली

(१ बहु-उपयोगी शाबर-मन्त्र, २ रक्षा-कारक श्रीहनुमान शाबर-मन्त्र, ३ 'रक्षा' और 'विजय' हेतु शाबर-मन्त्र, ४ शत्रु-भय-निवारक, रोग-नाशक शाबर-मन्त्र, ५ भूत-प्रेत-निवारक शाबर-मन्त्र, ६ दूध उतारने का शाबर-मन्त्र, ७ नेत्र-विकार दूर करने का शाबर-मन्त्र, ८ सर्वो-पद्रव-निवारक शाबर-मन्त्र, ९ अर्श (बवासीर) नाशक शाबर-मन्त्र, १० शीतला-शान्ति-कर शाबर-मन्त्र)

८ शाबर हनुमान-मन्त्र ४०
श्री सोम चैतन्य श्रीवास्तव

९ हनुमत् 'शाबर' मन्त्र-प्रयोग ४४
श्री शाबर-चिन्तामणि-ग्रन्थोक्त प्रयोग

१० भूतादि-ग्रस्त या दृष्टि-दोष-निवारक हनुमान-मन्त्र ४८

११ सर्व-रोग, सर्व-व्याधि-निवारक हनुमान-मन्त्र ४९

१२ शाबर भैरव-मन्त्र ५०
(१ सर्व-कार्य-सिद्धि-प्रद श्रीकाल-भैरव बटुक - भैरव प्रयोग, २ भूत, प्रेत, पिशाच, शत्रु-भय-निवारणार्थ प्रयोग, ३ कामना-सिद्धि प्रयोग, ४ रक्षा-प्रयोग, ५ वशी-करण मन्त्र, ६ स्वप्न में कामना-ज्ञान का मन्त्र, ७ सर्व-कामना-पूर्ति का मन्त्र, ८ भूत-प्रेत-नाच बन्द करने का मन्त्र)

१३ रोग-निवारक शाबर मन्त्र-अष्टक ५९
(आधा सीसी, कामला-पीलिया, कण्ठ-माला, नाभि उखड़ने की पीड़ा, दाँत की पीड़ा, अर्श, कखलाई-निवारक प्रयोग)

१४ सर्प-बिच्छू-विष-निवारक शाबर-मन्त्र ६१

१५ शाबर 'मोहन' मन्त्र ६३

१६ आशु फल-प्रद सिद्ध शाबर महा-लक्ष्मी मन्त्र ६५

१७ सरस्वती शाबर मन्त्र ६६

१८ श्रीबगला सिद्ध शाबर मन्त्र ६७

१९ अन्नपूर्णा शाबर मन्त्र ६८

२० सिद्ध शाबर मन्त्र ६९
श्री स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती की कृपा से प्राप्त
संग्रह-कर्त्ता : पं० कृष्णानन्द दुबे

दो शब्द

अति विस्तृत 'मन्त्र-शास्त्र' के विभिन्न सिद्धान्तों की एकता हेतु परम पूज्य 'राष्ट्र - गुरु' श्री स्वामी जी महाराज दतिया ने यजुर्वेद (१७-९१) के निम्न-लिखित मन्त्र द्वारा अनूठा स्पष्टीकरण किया है–

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महा-देवो,
मर्त्यान् ँ आविवेश ॥

अर्थात्—विचित्र वृषभ, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला होकर शब्द कर रहा है, जिसके चार सींग, तीन पाद, दो मस्तक, सात हाथ हैं और जो तीन स्थानों में बँधा हुआ है, ऐसा महा-देव सभी मनुष्यों के अन्दर प्रविष्ट हो रहा है ।

मन्त्र-शास्त्रीय व्याख्या : चत्वारि शृङ्गा–१ **वैदिक**, २ **पौराणिक**, ३ **तान्त्रिक** और ४ **शाबर**––ये चार प्रकार के मन्त्र ही चारों शृङ्ग हैं ।

त्रयो अस्य पादा—१ **कादि**, २ **हादि** और ३ **सादि**—ये तीन मन्त्र हैं, जिनकी उपासना की पद्धतियाँ ही तीन पाद हैं ।

'द्वे शीर्षे'––१ **'सोहं'**, २ **'हंसः'** अथवा प्रकाश-विमर्श रूप पद-युग ही दो मस्तक हैं ।

सप्त-हस्तासो—१ **वैदिक**, २ **वैष्णव**, ३ **शैव**, ४ **दक्षिण**, ५ **वाम**, ६ **सिद्धान्त** और ७ **कौल** आदि सप्त आचार ही सात हाथ हैं ।

त्रिधा बद्धः––१ **सूर्य**, २ **सोम**, ३ **अग्नि**–इन त्रिविध मण्डलों में जो बँधा हुआ है ।

रोरवीति—सम्पूर्ण कामनाओं की वर्षा करनेवाला **'शब्द-ब्रह्म'** तत्त्व के भेद से **'वर्ण-स्फोट'-रूप** से गृहीत है ।

महा-देवो–इस पद से 'मन्त्र' और 'देवता' के तादात्म्य (अभेदत्व) को बताया गया है। ऐसा तत्त्व, सभी जीवों में **परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी-रूप** से प्रविष्ट हो रहा है। सभी जीवों में इस तत्त्व के पूर्ण विकास के लिए **'तत्त्व-ज्ञान'** के क्रम से **'श्रीगुरु-कृपा'** द्वारा साधक पूर्णता को प्राप्त करता है क्योंकि––**साधना में शब्द का अधिष्ठान प्रत्यक्ष और निःसंदिग्ध है।**

यजुर्वेद के मन्त्र (१७-९१) की उपर्युक्त मन्त्र - शास्त्रीय व्याख्या के आधार पर मन्त्र-शास्त्र के द्वारा प्रतिपादित सभी सिद्धान्तों की एकता को दिखाते हुए परम पूज्य स्वामी जी महाराज कहते हैं कि—

'…कोई पूछ सकता है कि तन्त्र-शास्त्र (एवं शाबर) तो आधुनिक है, वेद-मन्त्र अनादि है, उसमें इनका वर्णन असङ्गत है, परन्तु भारतीय तत्त्व-ज्ञान में यह निश्चित है कि कोई वस्तु नवीन नहीं है। अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। कारण से पृथक् कार्य की प्रतीति केवल संस्थान-भेद-मात्र है। इसलिए यह आशङ्का नहीं हो सकती।…'

अतः परम पूज्य स्वामी जी की उपर्युक्त मन्त्र - शास्त्रीय व्याख्या एवं स्पष्टीकरण से दो बातें अत्यन्त स्पष्ट हो जाती हैं–
१ **'शाबर-मन्त्र' मन्त्र-शास्त्र के महत्त्व-पूर्ण अङ्ग (शृङ्ग) हैं और**
२ **वैदिक, पौराणिक, तान्त्रिक मन्त्रों के समान 'शाबर-मन्त्र' भी अनादि हैं।**

शाबर मन्त्रों से सर्व-साधारण लोगों का कल्याण अति प्राचीन-काल से साधित रहा है। भारत के परतन्त्र रहने से जहाँ उसकी अन्य दिशाओं में अवनति हुई, वहाँ उसकी महत्त्व-पूर्ण 'मन्त्र-विद्या' का विकास भी रुक गया।

'शाबर-मन्त्र विद्या' को कुछ तो अज्ञान-वश, कुछ अपना एकाधिकार बनाए रखने के लिए स्वार्थी व्यक्तियों ने छिपाया। छिपाते-छिपाते यह दशा हुई कि आज यह विद्या ही लुप्त-प्राय हो चुकी है। सामान्य लोगों की श्रद्धा इस विद्या पर से उठ गई है। लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि इन मन्त्रों द्वारा व्यक्ति की अभिलाषाओं की पूर्ति भी हो सकती है।

मन्त्र-विद् साधकों एवं 'मन्त्र-विद्या' के प्रशंसकों, जिज्ञासुओं के लिए यह गम्भीर विचार का विषय है। उन्हें सोचना-समझना चाहिए कि किस प्रकार से इस **'मन्त्र-विद्या'** को अपने पूर्व-गौरव पर प्रतिष्ठित किया जाए। निःसन्देह यह कार्य सिद्ध या सिद्ध प्रतीत होनेवाले मन्त्र-प्रयोगों को गुप्त रखने से नहीं होगा। उलटे **ऐसे प्रयोगों को जनता के समक्ष रखना होगा, जिससे श्रद्धालु व्यक्ति उनके सम्बन्ध में प्रयोग करके देख सकें और जान सकें कि 'मन्त्र-विद्या' में कितना बल है और इसकी सहायता से जीवन-यापन में कितनी सुगमता का अनुभव किया जा सकता है।**

यहाँ हम इस बात से सहमति प्रकट करते हैं कि 'मारण' आदि उग्र प्रयोग--यदि किसी को ज्ञात हों, तो वे उग्र प्रयोग अवश्य गोपनीय रक्खे जाएँ क्योंकि उनके प्रकाश में आने पर क्षुद्र व्यक्ति उनका दुरुपयोग कर सकते हैं। परन्तु **वे प्रयोग, जिनसे लोगों का हितसाधन हो सकता है--किसी का अपकार नहीं किया जा सकता, अविलम्ब प्रकाशित होने चाहिए। वैसे प्रयोगों का छिपाना धर्म तो दूर रहा, भीषण पाप है--क्योंकि पता नहीं, कब-किसे-किस-रूप में उनकी आवश्यकता पड़ती हो और उनके न जानने से उसका अनिष्ट हो जाता हो!**

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमारे द्वारा तान्त्रिक मन्त्रों का अपूर्व **'मन्त्र-कोष'** प्रकाशित किया गया और अब **'शाबर-मन्त्र-संग्रह'** का **पहला भाग** प्रकाशित हो रहा है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बहुत कम व्यक्तियों ने इस कार्य में सहयोग देने की कृपा की है। हम पुनः विज्ञ बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि वे ज्ञात शाबर-मन्त्रों को हमारे पास लिखकर भेजने की कृप करें, जिससे हम **शाबर-मन्त्र-संग्रह, द्वितीय भाग** में उन्हें प्रकाशित कर सर्व-साधारण के लिए सुरक्षित कर सकें।

यहाँ यह भी सूचनीय है कि हमने संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में संग्रहीत कतिपय दुर्लभ शाबर-मन्त्र पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि हेतु आवेदन भेजा है। इस हेतु आवश्यक द्रव्य का भुगतान हमारे द्वारा २७ जनवरी, १९९१ को ही हो चुका है। दुर्भाग्य-वश

राजकीय अव्यवस्था के कारण पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ हमें अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी हैं। आशा है कि पाण्डुलिपियाँ हमें शीघ्र ही प्राप्त हो जाएँगी। प्राप्त होने पर हम उन्हें सु-सम्पादित कर **शाबर-मन्त्र-संग्रह, द्वितीय भाग** में प्रकाशित करेंगे।

हमारी यह भी इच्छा है कि शाबर-मन्त्रों से सम्बन्धित एक **पारिभाषिक शब्द-कोश** भी तैय्यार किया जाए, जिससे जिज्ञासु बन्धुओं को मन्त्र-प्रयोग में कोई कठिनाई न हो। अतः **शाबर-मन्त्र-संग्रह, द्वितीय भाग** में ऐसा **'शब्द-कोष'** भी प्रकाशित किया जाएगा। जो बन्धु यह कार्य करने में समर्थ हों, वे कृपया स्पष्ट रूप से हमें सूचित करने की कृपा करेंगे।

अन्त में हमें विश्वास है कि **शाबर-मन्त्र-संग्रह** का यह **पहला भाग** सभी साधकों को पसन्द आएगा।

चण्डी कार्यालय, प्रयाग **--ऋतशील शर्मा**

फाल्गुन पूर्णिमा २०४७ वि० : १६ मार्च, १९९१

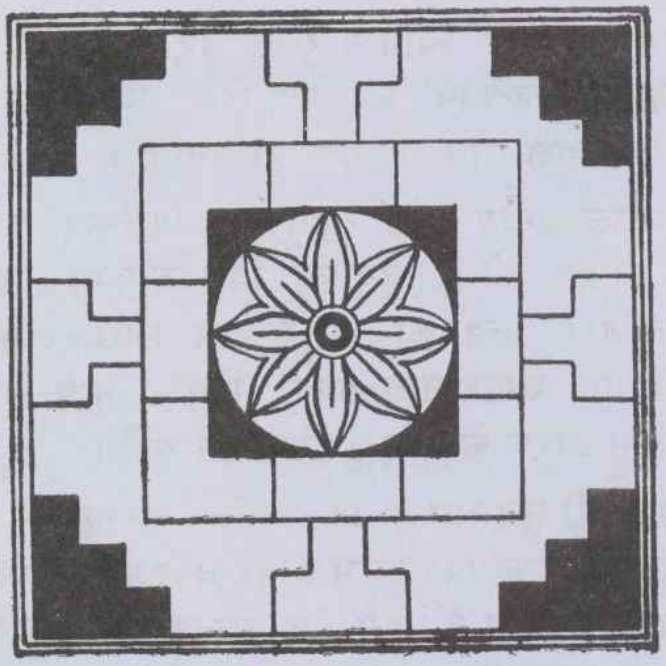

श्रीसाबर-शक्ति-पाठ

श्री 'साबर-शक्ति-पाठ' के रचयिता 'अनन्त-श्रीविभूषित श्रीदिव्येश्वर योगिराज' श्री शक्तिदत्त शिवेन्द्राचार्य नामक कोई महात्मा रहे। उनके उक्त पाठ की प्रत्येक पंक्ति रहस्य-मयी है। पूर्ण श्रद्धा-सहित पाठ करनेवाले को सफलता निश्चित रूप से मिलती है, ऐसी मान्यता है।

किसी कामना से इस 'पाठ' का प्रयोग करने के पहले तीन रात्रियों में लगातार इस पाठ की १११ आवृत्तियाँ 'अखण्ड दीप-ज्योति' के समक्ष बैठकर कर लेनी चाहिए। तदनन्तर निम्न प्रयोग-विधि के अनुसार निर्दिष्ट संख्या में निर्दिष्ट काल में भ० काली के विग्रह के सामने धूप-दीपादि सहित पाठ करने से अभीष्ट कामना की सिद्धि मिल सकेगी।

प्रयोग-विधि

१ लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु
नैऋत्य-मुख—बैठकर दो पाठ नित्य करें।

२ सन्तान-सुख-प्राप्ति हेतु
पश्चिम-मुख—बैठकर पाँच पाठ तीन मास तक करें।

३ शत्रु-बाधा-निवारण हेतु
उत्तर-मुख—तीन दिन सायं-काल ग्यारह पाठ करें।

४ विद्या-प्राप्ति एवं परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु
पूर्व-मुख—बैठकर तीन मास तक ३ पाठ करें।

५ घोर आपत्ति और राज-दण्ड-भय को दूर करने के लिए
मध्य-रात्रि में नौ दिनों तक इक्कीस पाठ करें।

६ असाध्य रोग को दूर करने के लिए

सोमवार को एक पाठ, मङ्गलवार को तीन पाठ, शुक्रवार को दो पाठ और शनिवार को नौ पाठ करें।

७ नौकरी में उन्नति और व्यापार में लाभ पाने के लिए

एक पाठ सबेरे और दो पाठ रात्रि में एक मास तक करें।

८ देवता के साक्षात्कार (दर्शन-लाभ) के लिए

चतुर्दशी के दिन रात्रि में सुगन्धित धूप एवं अखण्ड दीप के सहित १०० पाठ करें।

९ स्वप्न में प्रश्नोत्तर, भविष्य जानने के लिए

रात्रि में उत्तर-मुख–बैठकर नौ पाठ करने से उसी रात्रि में स्वप्न में उत्तर मिलेगा, किन्तु सट्टा या तेजी-मन्दी जानने के लिए इस प्रयोग का उपयोग करने पर हानि होगी, इसका ध्यान रहे।

१० विपरीत ग्रह-दशा और दैवी-विघ्न की निवृत्ति हेतु

नित्य एक पाठ सदा श्रद्धा से करने पर विपरीत ग्रह-दशा और दैवी विघ्न कभी न होंगे। साथ ही क्रमशः उन्नति एवं सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी–कभी किसी प्रकार की हानि न होगी।

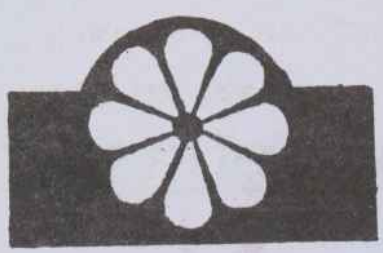

श्रीसाबर-शक्ति-पाठ

पूर्व-पीठिका

।। विनियोग ।।

श्रीसाबर-शक्ति - पाठ का, भुजङ्ग - प्रयात है छन्द ।
भारद्वाज शक्ति ऋषि, श्रीमहा-काली काल प्रचण्ड ।।
ॐ क्रीं कालो शरण - वीज, है वायु - तत्त्व प्रधान ।
कलि प्रत्यक्ष भोग-मोक्षदा, निश-दिन धरे जो ध्यान ।।

।। ध्यान ।।

मेघ - वर्ण शशि मुकुट में, त्रिनयन पीताम्बर - धारी ।
मुक्त-केशी मद-उन्मत्त सिताङ्गी, शत-दल-कमल-विहारी ।।
गङ्गाधर ले सर्प हाथ में, सिद्धि हेतु श्री - सन्मुख नाचै ।
निरख ताण्डव छवि हँसत, कालिका 'वरं ब्रूहि' उवाचै ।।

।। पाठ-प्रार्थना ।।

जय जय श्रीशिवानन्दनाथ ! भगवन्त भक्त-दुःख - हारी ।
करो स्वीकार साबर-शक्ति-पाठ, हे महा-काल-अवतारी ।।

साबर-शक्ति-पाठ

ॐ नमो जगदम्बा भवानी, करो सिद्ध कारज महरानी ।
त्रिभुवन महिमा तिहारी, जै श्रीजया गगन - विहारी ।।
तेरे भक्त को दुःख न व्यापे, शाक्त से यम - राज भी काँपे ।
हनुमत वीर चलें अगुवानी, बाँएँ भैरव हैं महारानी ।।
पीछे वीरभद्र जब गरजें, दाँएँ नृसिंह वीर हैं हर्षे ।
कलि प्रत्यक्ष प्रभाव तुम्हारा, जो सुमरे दुःख विनसे सारा ।।

रक्त-नैनन से प्रगटी ज्वाला,
कांप उठे सुरासुर दिग्-पाला।
त्राहि-त्राहि भव-दुःख-भञ्जन माता,
कर जोर कहें सुर सिद्ध विधाता॥
जब-जब धर्म पर सङ्कट आया,
उठा त्रिशूल सब दुःख मिटाया।
धर्म सनातन की माँ तुम रक्षक,
पामर खल मानव दल भक्षक॥
भक्ति-पूर्ण हूँ शरण तुम्हारी,
जय दुर्गे श्यामा शिव की प्यारी॥

श्रीरक्त-काली-समर्पणम् ॥१

ॐ नमो श्रीतारिणी क्लेश-हारिणी,
भक्त-रक्षक माँ गगन-विहारिणी।
कर खप्पर-खड्ग मुण्ड की माला,
पाश गदा है भुजा विशाला॥
मद-भरे नयन त्रिभुवन-जन मोहें, पाँयन सुवरन घुँघरू सोहें।
राम-रूप तुमने जब धारा, भार भूमि सब असुर सँहारा॥
जल-सङ्कट-हर्ता बुद्धि की दाता, जय जय श्रीताराम्बा माता।
वाहन मयूर कर वीणा बाजे, साम-वेद सुन्दर ध्वनि गाजे॥
रूप कालिका घोर भयङ्कर, शाक्त जनों को लगता सुन्दर।
मतवाली हो रण में धावे, दानव - दल तोहि देख घबरावे॥
वाहन सिंह चढ़ो अब श्यामा, द्वेष-संहार का बजे दमामा।
उग्र प्यास भैरव की बुझाओ, कला कोटि नर-मेध रचाओ॥
उग्र - तारा है नाम तिहारा, धूम - केतु बन प्रगटो तारा।
संहार करो कु-सृष्टि को काली, जय जय श्रीदुर्गे डमरू वाली॥
नहीं आँच तेरे भक्त को आवे,
मदान्ध खलों की सत्ता मिट जावे।
जब भी पाप बढ़ा है जग में,
काली-रूप हो मेटा क्षण में॥

भक्ति-पूर्ण कहता माँ तुझसे, पाप साम्राज्य उठा भू-तल से।
'धर्म की जय' हो गूँजे नारा, अखण्ड वर्ग धर्म रहे तुम्हारा ।।

सत्य की शान्ति ब्रह्मचर्य व्रत, मातृ-भक्ति से रहे सदा रत।
सहस्र-भुजे माँ दुर्ग-नन्दिनी, शिवा शाम्भवी दुष्ट- धर्षिणी।।

त्रिपुर-मालिनी हे विन्ध्य-वासिनी,
भाल कुअङ्क विधि-लेख-नाशिनी।
अष्ट-वीर योगिनी मङ्गल गावें,
शक्र तुम्हारा चँवर डुलावें ।।

मणि-द्वीप में राज भवानी, धन्य - धन्य माँ उमा महरानी।
मुझे जगज्जये ! आशा तेरी, अष्ट-भुजे ! भाग्य बदल दे मेरा ।।

जो सुमरे काली - तारा, पाप - त्रिताप भस्म हो सारा।
चरण पाताल शीश कैलाशा, रूप विराट तोड़े यम-पाशा ।।

अनन्त रूप युग - युग में धारे, भक्त-जनों के काज सँवारे।
त्रिभुवन-दानी श्रीनाद-नादिनी, रवि-शत-कोटि-प्रभा प्रकाशिनी ।।

श्रीतारा-समर्पणम् ।।२।।

ॐ नमो श्री षोडशी षण्मुख-जननि,
सदा बसो मम हृदय वर-वर्णिनी।
हूँ भक्ति-पूर्ण तेरा ही अंशी,
वर्द्धित हो यह सत्कुल सद्-वंशी ।।

श्रीयन्त्र-राज-स्मरण की शक्ति,
चरण-कमल की माँ दे दो भक्ति।
चक्र त्रिशूल खड्ग कमल धारे,
घन गर्जन कर राक्षस मारे ।।

अरुण वरण पद सुन्दर रूपा,
ध्यावत जो नर होय सो भूपा।
रवि-शशि लज्जित निरख पद-शोभा,
सेवे शाक्त हृदय अति लोभा ।।

त्रि-भुवन-सुन्दरी वयस किशोरा, मोहे शिव ज्यों चन्द्र-चकोरा ।
स्तन अमृत - रस - भण्डारा, पीवत होय बुद्धि - बल-भारा ।।
जेहि पर कृपा तुम्हारी होई, स्तन - अमृत पावे सोई ।
करुणा-दृष्टि विलोके जोई, विश्व-विख्यात कवि सो होई ।।

जो भगवती षोडशी को ध्यावे,
अक्षय आयुष - यौवन पावे ।
निर्द्वन्द विमल गति मति दाता,
जय श्रीश्यामे ! त्रिभुवन भाग्य-विधाता ।।

पङ्कज आभा सुगन्ध शरीरा, श्याम-गात विविध रङ्ग चीरा ।
महिष-मर्द्दनी अमित बल-शाली, जै-जै सती सिद्धिदा काली ।।
आसव-पान-मत्त अट-पट वाणी, शाक्त-मण्डल को सुख-खानी ।
जल-थल-नभ किलोल करन्ती, जय भद्रकाली माँ मम दुख-हन्त्री
निर्धन सृष्टि-गत जो बालक तोरे, उनके शीघ्र बसा दे डेरे ।
संसार-इच्छुक जिनका मन, दे दो माँ उन्हें स्त्री-सुत-धन ।।

हूँ भक्ति-पूर्ण तेरे चरणों का भौंरा,
तुमको नैना देखत चहुँ ओरा ।
भोग-मोह से भक्त यह है न्यारा,
मन चाहत तव चरण-अधारा ।।

ब्रह्म-वादिनी ब्रह्म-ज्ञान दे, विमला विमल मति-विज्ञान दे ।
सावित्री सर्व-शोक-दुःख-हर्ता, मम जीवन-धन तू जग-भर्ता ।।

मम मात-पिता गुरु-बन्धु तुम पद्मा,
तू गौरी सत् - असत् - रूपा माँ ।
रत्न-द्वीप की तुम महारानी,
सिद्धि ऐश्वर्य दो मुझे भवानी ।।
जहाँ जब सुमरूँ प्रकट हो जाओ,
उठा त्रिशूल सब विघ्न मिटाओ ।
अटल छत्र है राज तुम्हारा,
जो सुमरे हो भव-सिन्धु के पारा ।।

श्रीषोडशी-समर्पणम् ।।३।।

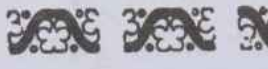

ॐ नमो श्रीभुवनेश्वरी - परमेश्वरी,
श्रीपार्वती माँ राजेश्वरी ।

श्रीकामदा काल-रात्रि एक-वीरा,
तेज-स्वरूपिणी दुर्धर्ष - बल-धीरा ।।

ऋण-नाश-कर्त्री श्री-शक्ति तू है, माँ-माँ सुत पुकारे तू किधर है ?
सर्वार्थ-दात्री नाम तेरा जग में, मेरी बार कहाँ भूली हो मग में ।।

पुत्र हो कुपुत्र पर कु-माता न होवे,
श्रीगङ्गा की धारा ज्यों पाप धोवे ।

मैं हूँ तेरा—आशा है सिर्फ तेरी,
भला या बुरा हूँ—पर माँ हो तुम मेरो ।।

खड्ग-खप्पर - पाश-माला हाथ में, चलता है भैरव तेरे साथ में ।
जिधर भी माँ नजर तूने फिराई, वहाँ ही बटुक जा करता सहाई ।।

शाकम्भरी श्रीपूर्णा गिरि-नन्दिनी, परमार्थ - शीले माँ नित्यानन्दिनी ।
क्षीर-सिन्धु किनारे बजाती हो वेणु, श्रीजयाम्बे तू ही मेरी कामधेनु ।।

दारिद्र - महिषासुर ने है घेरा, उठा त्रिशूल दुर्गे ! क्लेश मेटो मेरा ।
तू ही हरि-हर-विरञ्चि रूप शक्ति, जय श्रीश्यामा दे श्री-कीर्ति-भक्ति।।

राज-रानी तेरे सिवा कौन दाता, मिटा दे बुरा जो लिखा हो विधाता ।
तेरे ही प्रताप से कुबेर धनेश्वर कहलाया, जयति जै श्री भुवने माया ।।

श्रीभुवनेश्वरी-समर्पणम् ।।४।।

ॐ नमो श्रीधूमावती लीला-मयी, कलि प्रत्यक्ष तुम हो माहेश्वरी ।
जो चन्द्र-मण्डल में ध्यान धरते, पा कवित्व मोह - सिन्धु से तरते ।।

षण्मास जो तेरा स्वरूप ध्याता, पुष्प - धन्वो भी उससे हार जाता ।
पद्म-मालाएँ तेरे चरणों में धरता, विश्व-मण्डल का होता वह भर्ता ।।

तू ही अनेक रूपों से भासे, जो जान जाये—मृत्यु भी नासे ।
सिद्ध-विद्या तू अमृत - स्वरूपा, जिसके हृदय में वही है देव - रूपो ।।

श्यामरी भीमका मङ्गल-करी, जयन्ती जया तुम दुःख - हरी ।
त्रिगुण से परे है धाम तेरा, सदा ही कल्याण करो माँ मेरा ।।

तू ही पूर्णागिरीश्वरी कामेश्वरी, करुणा-मयी हो श्रीराज-राजेश्वरी ।
भूति-विभूति-दात्री श्री सती, भक्तों को देती हो श्री - कीर्ति - गती ।।

दिव्य - दृष्टि सिद्धैश्वर्य - दाता, भक्ति - पूर्ण करूँ मैं प्रणाम माता ।
तेरा ही गुण गाता रहता हूँ शाक्त, दया-मयी चाहता हूँ तेरी भक्ति ।।

बिगाड़ो या बनाओ अधिकार तुमको, न होगा जरा भी मलाल मुझको ।
किश्ती ये कर दी माँ तेरे हवाले, चाहे डुबा दे या चाहे बचा ले ।।

तमन्नाओं की धूप देता हूँ तुमको, तेरे नाम से है इश्क मुझको ।
तेरी याद में माँ दिल आँसू बहाता, हठी मुसाफिर राह चलता जाता ।।

पीताम्बरा चाहे जितना सता, कभी-न-कभी पाऊँगा तेरा पता ।
अभयङ्करी हे मणि - द्वीप - रानी, तेरी सेवा में रत हैं सिद्ध ज्ञानी ।।

त्रिशूल खप्पर गले मुण्ड - माला, मुक्त - केशी त्रिनयन हैं विशाला ।
श्रीखेचरी गन्धर्व-लोक-दात्री, अष्टाङ्ग योग-वक्ता तू श्री - विधात्री ।।

पीला कमल - सा चरण तेरा, बना है जीवन का आधार मेरा ।
तेरी लीला श्री तू ही जाने, भक्त तो यथा - शक्ति गुण बखाने ।।

कुलाचार से योगी करते हैं पूजा, तू ही तो ब्रह्म न और दूजा ।
माँ-पुत्र सबसे बड़ा है नाता, पुत्र हो कु - पुत्र—न माता कु - माता ।।
इतना ही बस—मैं जानता हूँ, मानो न मानो—मैं मानता हूँ ।

श्रीधूमावती-समर्पणम् ।।५।।

ॐ नमो श्रीभैरवी भूतेश्वरी,
आनन्द - दाता त्वं ज्ञाने-मातेश्वरी ।
श्री वीर - विद्या चतुर्भुजा सोहे,
पात्र नाग शूल पाश शत्रु मोहे ।।

श्मशाने निवासिनी श्यामा दिगम्बरा, माँ भैरवी भक्त-पालन-तत्परा ।
अस्थि-मुण्ड - माल त्रिनेत्र-कराला, चरणों में सोहत गुञ्ज - माला ।।

मद - मत्त हो तुम खिलखिलातीं, आ - सेतु पृथ्वी काँप जाती ।
बिगड़ी को बनाता है नाम तेरा,
तव पदाम्बुज में लिपटा रहे मन मेरा ।।

संग्राम में जीत पाए वही, जिस पर माँ ! तेरी छाया रही।
जो हुआ जग में तेरे सहारे, उसका यम भी क्या बिगाड़े ।।

मृत्युञ्जयी तू हृदय में जिसके, काल भी घबराता है उससे।
मारकण्डे पर की तूने मेहर, हो गया उसी क्षण माँ ! वो अमर ।।

हनुमान ने जब स्तुति गाई, पा आशीर्वाद जा लङ्का जलाई।
मेघनाद ने जब तुझे ध्याया, इन्द्र को जा बाँध लाया ।।

श्रीत्रिपुरा-चक्र-यज्ञ राम ने रचाया, तेरी कृपा से ही रावण मिटाया।
श्री - तत्त्वागम जो नित्य ध्याता, कलि में वही भोग - मोक्ष पाता ।।

विन्दु - शक्ति शिव पृथ्वी को, भैरव - रूप हो पावे।
पाप - पुण्य से निर्द्वन्द होवे, नित्यानन्द - पद जावे ।।

चक्र - योग का विषय है, मैथुन पात्र आनन्द।
जो समझें शिव - रूप वे, नहीं तो पामर - वृन्द ।।

विद्या - साधन अगम है, चलना तलवार की धार।
गुरु - कृपा से सफलता, वरना टुकड़े होंय हजार ।।

दिगम्बरा विपरीत - रति ध्यावे, या हो अमर या नरक में जावे।
कुल - पथ अमृत - मय धारा, जिसमें कापालिक करें विहारा ।।

भैरवी - भूतनाथ जपता जो नर, मन - वाञ्छित सिद्धि हो सत्वर।

श्रीमहा-भैरवी-समर्पणम् ।।६।।

ॐ नमो श्रीबगलामुखी - स्वरूपा,
शत्रु - संहार करो देवि ! अनूपा।
चरण तेरे कोमल कमल - जैसे,
जिसके हृदय में वही देव जैसे ।।
दुःख-शुम्भ ने आ घेरा है मुझको,
मिटा क्लेश मैया भक्त कहे तुझको।
पीताम्बरा श्रीअपराजिता तू कहाई,
जभी भक्त सुमरे तू करती सहाई ।।
गदा-चक्र-पाश - शङ्ख हाथों सोहे,
चतुर्भुज रूप तेरा शिव को मोहे।

योग - दीक्षा - हीन को न होता ज्ञान तेरा।
पूर्णाभिषिक्त भी न जान पाएँ धाम तेरा॥
जिस पर तेरी कृपा हो वही गुण - गान करता।
दम्भी तन्त्र - साधक क्लेशित हो के मरता॥
तेरे अनन्त रूपों ने की भक्त - रक्षा।
तेरे वीर - भद्र सुत ने मारा था दक्षा॥
कलि में महिमा - मयि ! व्यर्थ हैं कर्म सारे।
भक्ति - पूर्ण हो जै - जै जयाम्बा पुकारे॥
तम - प्रबल युग में भ्रमित हैं कर्म - काण्डी।
शुष्क वेदान्त छाँटें बक - वत् त्रि - दण्डी॥
वाक् - मनो - काय - निग्रह कोई न करते।
गृह - सदृश पलँग पर फल - फूल चरते॥
जिधर देखा उधर ही सभी ब्रह्म - वक्ता।
उपासना बिन स्वरूप - ज्ञान कैसा॥
आहार - निद्रा - पटु पृथ्वी—जल - चारी।
कैसे हों माता सहस्रार - विहारी ?
कहते कपिल सहस्रार हो आए।
ईश्वर - सम शक्ति - प्रतिभा को पाए॥
नाभि - चक्र तक योगी जाता, अष्ट - सिद्धि - गुण प्रगट हो जाता।
अनाहत - प्रकाश प्रत्यक्ष हो जाए, सहस्र - वर्ष आयु वह पाए॥

मैं तो स्वाधिष्ठान तक आया,
अति अद्भुत देखी तेरी माया।
मान-सरोवर त्रिकोण दिव्य सुन्दर,
श्रीधाता-शारदा बैठे हैं कमल पर॥

भुजङ्ग स्वर्ण-मयी महा-काम-स्वरूपा, नत-मस्तक हो पूजत सुर-भूपा।
गायत्री प्रकृति श्री-यन्त्र मनोहर, श्रीशुभ्र-ज्योत्स्ने विश्व-मोहन-कर॥

राज-राजेश्वरी अमित बल-शाली,
सर्वार्थ-पूर्ण-करी श्री-हंस-काली।
श्रीदिव्य सिद्ध-धाम गुरु-रूप धरी,
जै श्रीबगला शाक्त-मनोरथ पूर्ण करी॥

जिह्वा पकड़कर गदा उठाए, पाश डाल शत्रु को मिटाए।
उन्मत्त नेत्र बक - वाहन सुहाए, भक्त - रक्षा हेतु शीघ्र ही धाए ।।

सिद्ध - विद्या श्री स्तम्भिनी मङ्गला, करो त्राण मम भीमा चञ्चला।
त्र्यक्षरी मन्त्र-मूर्ति माँ माहेश्वरी, कलि-प्रत्यक्ष फलदा तू परमेश्वरी ।।
भुक्ति-मुक्तिदा भक्त-शरण्ये, नमामि भजामि श्रीगिरि-राज - कन्ये !
श्रीचक्र-राज-शक्ति तुम कहातीं, विधि का लिखा कु-अक्षर मिटातीं ।।

सिद्ध-भक्ति-पूर्ण को है विश्वास तेरा,
ब्रह्मास्त्र-मन्त्र-रूप है आधार मेरा।
लोक-लाज-प्रपञ्च-कर्म त्यागा,
श्रीबगला-चरण - कमल मन लागा ।।

श्रीबगलामुखी समर्पणम् ।।७।।

ॐ नमो श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-चरणं,
ब्रह्मादि - सेवित दारिद्र्य - हरणम् ।
बुद्ध-देव - वन्दित दया - सागरी,
वज्र - यान-वर्ग - पूज्ये श्रीकामेश्वरी ।।
अमृत-पात्र-पद्म-इक्ष-धनुर्बाण - हस्ता ।
ताम्बूल-पूरित-मुखी श्रीस्वानन्द-मस्ता ।।

तृतीयावरण में बाला कहाई, शरण मैं तेरी—करो माँ सहाई ।।
त्रिपथगा त्रिवर्णाराध्य शक्ति, श्रीसुन्दरी दे पद - कमल - भक्ति ।
क्रम-दीक्षाचार-वर्णित श्रीभवानी, हे कुरङ्ग-नेत्री तू सर्व-सुख-दानी ।।
पद्मावती सर्वाकर्षिणी कुरुकुल्ला, देखता हूँ तू ही है अहिल्या ।
कामेश्वर-प्रिया आद्या श्री-प्रसूता, पालन करती है तू विश्व-भूता ।।

श्रीशताक्षरी दिव्य-कादि-हादि-मूर्ति,
रहस्यार्थ-पूर्णे ! तुम हो सर्व-पूर्ति ।
अभिनव गुप्त सुपूजित माहेश्वरी,
सिद्ध नागार्जुन-वन्द्य वागेश्वरी ।।

धाता हरि रुद्र शासन - करी, जयति जय श्रीअभयङ्करी ।
पञ्च-प्रेतासन-आरूढ़ा तू अम्बा, बिन्दु-मालिनी जय-जय सिद्धाम्बा ।।

कर्पूर-गौर - वर्णा श्रीकाकिनी,
श्रीचक्रेश्वरी मदनातुरा लाकिनी।
श्रीललिता लक्ष्मी काम-बीज-रूपा,
करें प्रदक्षिणा ऋषि-देव-यक्ष-भूपा ॥

राज- राजेश्वरि तू ही अन्नपूर्णा, श्रीपीठाधीश्वरी सर्वाभीष्ट-तूर्णा।
अर्बुदाचल में अम्बिका कहाई, अष्ट - भुजा सिंह - वाहना कहाई ॥

नील - वस्त्र - धारी सुकुमारी, जयति जयाज्ञा - चक्र - विहारी।
अनङ्ग - मेखला है तेरा नाम, श्रीचक्र-राज प्रतिबम्ब - मय धाम ॥

तू धरा धैर्य धर्म कर्म स्मृति, भक्तों को देती भोग औ सद् - गति।
देखे चरण तेरे परमेश्वरी, हो गया तभी मुक्त श्रीमाहेश्वरी ॥
पञ्चानन-प्रिया दुर्गमार्थ-दात्री, दुर्गतोद्धारिणी तुम हो विधात्री।
वारुणी-प्रिया मद-मत्त-हासिनी, जय हेम - कूट-शिखरे विलासिनी ॥

चन्द्र-बिम्बे प्रभा तू चतुर्वग-फलदा, एक - वीरा अपर्णा श्रीकामदा।
महा-विद्या स्वयम्भू श्रीसुधा, त्रिभुवन-वशङ्करी हे रत्न - सुविधा ॥

माया-नृत्य-प्रवीणा गङ्गे नर्मदे, तू ही है सरस्वती विप्र - वरदे।
काव्य-छन्द-गति ऋद्धि सन्मति, शाक्त - सेवित श्रीवामा त्रिमूर्ति ॥

रत्न-हार-भूषित नित्य यौवन-जया, भक्त को सदा दो अभय विजया।
मधुमती-कला श्रीपार्वती सती, रहूँ तेरे प्रताप से मैं सत्य-व्रती ॥

निर्मला राधिका तू ही कालिका, है तेरा ही रूप तो हर-बालिका।
कभी न विचलित हो मति मेरी, रहे सदा मुझ पर कृपा-दृष्टि तेरी ॥

श्रीत्रिपुराम्बा समर्पणम् ॥८॥

ॐ नमो देवि ! मातङ्गी-पादारविन्दा,
रक्ष-यक्ष-सेवित महा-कवीन्द्रा।
चतुर्भुजा-चण्ड-क्लेश-पाप-हन्त्री,
भक्त-जनों की सदा जय-करन्ती ॥

शुक - क्रीड़ा - मग्न स्मित - मुखी, शीघ्र तेरा भक्त होता सुखी।
चतुर्विंशति-दल पर करे निवासा, धरे ध्यान होते छिन्न सभी पाशा ॥

नाद-गर्भा नारायण-पूजिता शुभा,
मङ्गला भद्रा भक्त-कल्प-सुधा ।
रामेश्वरी रुद्र-प्रिया श्रीरागिनी,
स्वर्ण-द्युति-कुञ्जिका विन्ध्य-वासिनी ।।

हेम-वज्र-माला-धारिणी श्रीरति, तेरे प्रताप से होऊँ पृथ्वी - पति ।
संग्राम-क्षेत्र में तू रमा करती, प्रगट हो भक्तों के सङ्कट हरती ।।
शार्दूल-वाहना गले शङ्ख-माला, प्रज्वलित-नेत्रा पीती हो हाला ।
गन्धर्व-बालाएं करतीं गुण-गान, तेरे ही भक्त माँ धाता चक्र-वान ।।
सूर्य-चन्द्र - वह्नि - रूप नेत्र तेरे, रहें सहायक सर्वदा माँ मेरे ।
जब भी सुमरूँ हरो कष्ट मेरा, श्री जयाम्बे मुझे तो आधार तेरा ।।
हे नाग-लोक-पूज्या प्राण-दाता, भक्ति-पूर्वक करता नमस्कार माता ।

श्रीमहा-मातङ्गी समर्पणम् ।। ६ ।।

ॐ विष्णु-प्रिया दिग्दलस्था नमो,
विश्वाधार-जननि कमलायै नमो ।

बीजाक्षरों की तुम्हीं सृष्टि करतीं,
चरण-शरण भक्त के क्लेश हरतीं ।।

सिन्धु - कन्या माया-बीज-काया, मोह - पाश से जग को भ्रमाया ।
योगी भी हुए हैं हैरान तुमसे, कराओ अन्तर्बहिर्याग नित्य मुझसे ।।
न करता हूँ जाप-पूजा मैं तेरी, इतना ही जानता हूँ माँ तू मेरी ।
पद्म - चक्र - शङ्ख - मधु - पात्र धारे, विकट वीर योद्धा तूने सँहारे ।।
श्रीअपराजिता वैष्णवी नाम तेरा, माँ एकाक्षरी तू आधार मेरा ।
तू ही गुरु-गोविन्द करुणा-मयी, जै जै श्रीशिवानन्दनाथ-लीला-मयी ।।
ऐरावत हैं शुण्डाभिषेक करते, दे प्रत्यक्ष दर्शन हे विश्व - भर्ते ।
योग - भोगदा रमा विष्णु - रूपा, मेरी कामधेनु काम - स्वरूपा ।।
सिद्धैश्वर्य-दात्री हे शेष-शायी, करे दास बिनती करो माँ सहाई ।
पद्मा चञ्चला श्रीलक्ष्मी कहाई, पीताम्बरा तू गरुड़-वाहना सुहाई ।।
त्रिलोक - मोहन - करी कामिनी, जयति जय श्रीहरि - भामिनी ।
रुक्मिणी राज्ञी अर्थ-क्लेश-व्राता, जय श्रीधन - दात्री विश्व - माता ।।

महा-लक्ष्मी लक्ष्मणा श्यामलाङ्गी,
पद्म - गन्धा श्री श्रीकोमलाङ्गी ।
कालिन्दी कमले कर्म-दोष-हन्त्री,
सुदर्शनीया ग्रीवा में माला वैजन्ती ।।
श्रीमहा-लक्ष्मी कमला समर्पणम् ।।१०।।

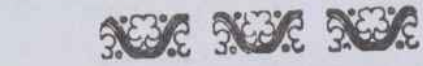

गदा-खड्ग-खेट-खप्पर-नाग-चक्र - शूल - शङ्ख - पात्र हाथों में सोहे ।
जय महिषासुर-मर्दिनि चण्डिके, अष्टादश-भुजे विश्वम्भर-मन मोहे ।।
शाकम्भरी दुर्गा दुर्गमा कहलाती, भक्त-रक्षा हित प्रगट तू हो जाती ।
अमृत-दायिनी श्रीश्यामा सहोदरी, विद्युत्प्रभे तू सर्वार्थ - पूर्ण-करी ।।
श्रीइन्द्राक्षी मणि-द्वीपे राज-रानी, जयति जय त्रिभुवन-विख्यात दानी ।
सर्व-मुद्रा-मयी खेचरी भूचरी, कुलजा कौलनी माधवी चाचरी ।।
अगोचरी हो तुम कुल-कमलिनी, सहस्रार-शक्ति अर्द्ध-नारीश्वरी ।
इच्छा-क्रिया-ज्ञान-मूर्ति मातेश्वरी, श्रीविद्या तत्त्व-माता परमेश्वरी ।।
भवानी भग-मालिनी हेम-गर्भा परा,
सदसत अद्वैत-जननि ऋतम्भरा ।
अहङ्कार-प्रकृति-स्व-स्वरूप-यजना,
ब्रह्म-जननि वेद-माता गगन-वसना ।।
चतुष्षष्टि-तन्त्रागम-यामला, इनसे भी परे हो तुम चित्-कला ।
मातृका वह्निरन्तर्याग - माया, सिद्ध-सनकादि ने भी न भेद पाया ।।
चक्र-वेध से भी परे है धाम तेरा,
नम्र-दिव्य-भावी हृदय में वास तेरा ।
मैं दीन भक्त तुम्हें कैसे मनाऊँ,
दे चरण-भक्ति सदा गुण गाऊं ।।
श्रीविन्ध्येश्वरी अजा वर-वर्णिनी, तैजस-तत्त्व-श्यामे तू अति गर्विणी ।
आद्या अम्बिका तू है श्रीसुन्दरी, चन्द्र-भगिनी हेम-वदना किन्नरी ।।
तू ही तू है मां व्याप्त जग में, सर्वत्र तुमको ही देखता हूँ मग में ।
पाप-पुण्य से परे मैं हूँ तेरा, श्रीजयाम्बे मां ! तू मेरी मैं तेरा ।।

महा-काल के वचन से भूतल पर आया, तू शरीरी मैं हूँ तेरी छाया।
तेरे ही बल से साबरी छन्द कहता, सर्व-शक्ति-दायी शत्रु-वंश-हन्ता ।।
तीन मास ध्यावे दर्शन पावे, वाद - सम्वाद में सुर-गुरु को हरावे।
साबरी - शक्ति-पाठ-वशी सुरेशा, सर्व- सिद्धि पावे साक्षी हों महेशा ।।
त्रिवर्ण के ही लिए साबरी यह, म्लेच्छ जो पढ़े तो निर्वंश हो वह।
साबरी अधीन हैं वीर हनुमान, उठो-उठो सिया- राम की आन ।।
अञ्जनि - सुत सुग्रीव के सङ्गी, करो काम मेरा वीर बजरङ्गी।
तीन रात्रि में सिद्ध कर कामा, शपथ तोहे रघुपति की बल-धामा ।।
अष्ट - भैरव रक्षण करें तन का, वीरभद्र विकास करें मन का।
नृसिंह वीर ! मम नेत्रों में रहना, जहाँ पुकारूँ सम्मोहित करना ।।
सिद्ध साबरी है श्यामा का बाण, रुद्र - पाठ हरे शत्रु का प्राण।
निशा साबरी श्मशान में गावे, नक्षत्र - पाठ जाग्रत हो जावे ।।
वर्ष एक जो पढ़े तट गङ्गा, अर्द्ध - रात्रि में होकर असङ्गा।
ताके सङ्ग रहें भैरव - नाथा, राजा - प्रजा झुकावें माथा ।।

बारा वर्ष रटे साबरी हो ज्ञानी,
सदा सङ्ग में रहें भवानी।
हो इच्छा-जीवी योग-गति-ज्ञाना,
निष्प्रयास प्राप्त हों सकल विज्ञाना ।।
कहे सिद्धि-राज भक्त सुनो माँ काली !
शाबरी-शक्ति तुम्हीं हो कराली।
शाबरी - पाठ निन्दा जो करे,
होय निर्वंश तन कीड़े पड़ें ।।
शाक्त-रक्षिणी मम शत्रु-भक्षिणी,
श्रीरक्त-कालि ! सब भय-दुःख-हरिणी।
सिद्धि-भक्त यह चरणों में तेरे,
'कल्याण करो मेरा' बार - बार टेरे ।।
श्री चण्डी-समर्पणम् ।।११।।

।। श्रीसाबर-शक्ति-पाठं सम्पूर्णं, शुभं भूयात् ।।

शाबर-मन्त्र-विज्ञान

'शाबर' मन्त्रों के वैज्ञानिक स्वरूप पर आज तक गम्भीरता से किसी ने भी विस्तार से न तो विचार किया है और न ही इस पर कोई उल्लेखनीय शोध - कार्य हुआ है। इसी से स्पष्ट है कि भारतीय अध्यात्म की अपने ही देश में कैसी घोर उपेक्षा होती रही है। स्व० वामन शिवराम आप्टे के प्रख्यात संस्कृत-कोष में, जो सन् १९२४ में प्रकाशित हुआ, **'शाबर'**-शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार दी गई है :

'शब (व)-र-अण्'—शाबरः, शावरः, शाबरी।'

अर्थ में 'जंगली जाति' या 'पर्वतीय' लोगों द्वारा बोली जानीवाली 'भाषा' बताया गया है। वह एक प्रकार का मन्त्र भी है, इसका वहाँ कोई उल्लेख नहीं है। हाँ, गोस्वामी तुलसीदास जी ने अवश्य अपने लोक-प्रिय 'राम-चरित-मानस' में **'साबर-मन्त्र-जाल'** का महत्त्व स्पष्ट शब्दों में स्वीकार ही नहीं किया है, अपितु यह रहस्योद्घाटन भी किया है कि इस **'साबर-मन्त्र-जाल'** के स्रष्टा भी शिव-पार्वती ही हैं :

कलि बिलोकि जग - हित हर गिरिजा,
'साबर - मन्त्र - जाल' जिन्ह सिरिजा।
अनमिल आखर अरथ न जापू,
प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू॥

तुलसीदास जी ने 'शाबर'-मन्त्रों की यह भी विशेषता स्पष्टतः बता दी है कि इन मन्त्रों की शब्द - योजना में न कोई 'व्यवस्था' है और न 'अर्थ' का ही कोई महत्त्व है, साथ ही इनके जपादि का भी कोई नियम नहीं है। यहाँ यह ध्यान में रखने का बात है कि उक्त 'मानस' की रचना आप्टे से लगभग ४५० वर्ष पूर्व हो चुकी थी। फिर भी वे अपने 'कोष' में 'शाबर'-शब्द की मन्त्र-परकता का उल्लेख तक नहीं कर सके !

आधुनिक काल में महा-महोपाध्याय स्व० पण्डित गोपीनाथ कविराज जी ने अपने प्रसिद्ध 'तान्त्रिक-साहित्य' ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में **'शाबर मन्त्रों'** की कोई चर्चा नहीं की है, किन्तु ग्रन्थ के पृष्ठ

६२३-२४ में 'शाबर'-सम्बन्धी पाँच पाण्डुलिपियों का उल्लेख अवश्य किया है :

१. शाबर-चिन्तामणि–पार्वती-पुत्र आदिनाथ विरचित, २ शाबर-तन्त्र – गोरखनाथ विरचित, ३ शाबर-तन्त्र-सर्वस्व, ४ शाबर - मन्त्र, ५ शाबर-मन्त्र-चिन्तामणि ।

उक्त पाँच पाण्डुलिपियों में से प्रथम पाण्डुलिपि एशियाटिक सोसाइटी बङ्गाल के सूचीपत्र में संख्या ६,१०० से सम्बन्धित है। इसकी विषय-वस्तु पर कविराज जी ने मात्र इतना लिखा है कि—

'इसमें षट्-कर्म-देवताओं–रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा और कालिका के ध्यानों और मन्त्रों का प्रतिपादन है। तदनन्तर शान्तिक, वशीकरण आदि षट्-कर्म कहे गए हैं।'

द्वितीय पाण्डुलिपि की चार प्रतियों का उल्लेख कविराज जी ने किया है। पहली तो उक्त 'सोसाइटी' के ही सूची-पत्र की सं. ६०६६ से सम्बन्धित है, जिसके सम्बन्ध में केवल इतना ही परिचय दिया गया है कि 'यह ३ प्रकरणों में पूर्ण है।' दूसरी प्रति म० म० हरप्रसाद शास्त्री के विवरण की सं. १।३५६ है। इसकी विषय-वस्तु का वर्णन निम्न प्रकार किया गया है—

'आदिनाथ, अनादि, काल, अति-काल, कराल, विकराल, महा-काल, काल-भैरवनाथ, बटुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ और श्रीकण्ठ–ये १२ कापालिक हैं। इनके शिष्य भी १२ हैं—नागार्जुन, जड़ भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, मीननाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, अवघटनाथ, वैरागी, कन्था-धारी, धलन्धरि और मलयार्जुन। ये सब 'शाबर' मन्त्रों के प्रवर्तक हैं। इस ग्रन्थ के मुख्य-मुख्य विषय हैं—शाबर-सिद्धि-विधि, सब विपत्तियों को दूर करनेवाले सिद्ध और बली मन्त्र आदि योगिनी-मन्त्र, क्षेत्रपाल-मन्त्र, गणेश-मन्त्र, काली मन्त्र, बगला-मन्त्र, भैरवी-मन्त्र, त्रिपुर-सुन्दरी-मन्त्र, हेलकी-मन्त्र, मातङ्गी-मन्त्र, डाकिनी, शाकिनी, भूत, सर्प आदि का भय-निवारक मन्त्र, उच्चाटन, वशीकरण आदि के मन्त्र आदि।'

तीसरी प्रति डेकन कालेज, पूना सूचीपत्र में सं. ७३५ (१८८३-८४) पर उल्लिखित है। इसकी श्लोक-सं. ५८० है और पूर्ण है।

चौथी प्रति की तीन पाण्डुलिपियों का उल्लेख है, जो संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी के सूचीपत्र की संख्या २३८६७, २४५१५ और २४५७६ पर वर्णित हैं। ये तीनों अपूर्ण हैं और इनकी श्लोक-संख्या क्रमशः ६६६, ६५० और ५६ है।

तृतीय पाण्डुलिपि 'शाबर-तन्त्र-सर्वस्व' के सम्बन्ध में कविराज जी ने मात्र इतना लिखा है कि **'प्राप्त-ग्रन्थ-सूची से।'** कहाँ से यह 'प्राप्त ग्रन्थ-सूची' मिली, इसका कोई उल्लेख उन्होंने नहीं किया।

चतुर्थ पाण्डुलिपि की तीन प्रतियों का उल्लेख हुआ है। पहली प्रति एशियाटिक सोसाइटी के सूचीपत्र की संख्या ६५५८ है, जिसके विषय में कविराज जी ने लिखा है कि—**'इसमें शाबर मन्त्र हिन्दी तथा अशुद्ध संस्कृत में कहे गए हैं। इसका बहुत अंश 'दिव्य शाबर तन्त्र' से मिलता-जुलता है।'**

दूसरी प्रति बड़ौदा पुस्तकालय के अकारादि सूची-पत्र की संख्या ५६१४ पर है। श्लोक-संख्या १०० है।

तीसरी प्रति की दो पाण्डुलिपियों का उल्लेख है, जो संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी के सूचीपत्र की संख्या २३८५६ और २६२३२ से सम्बद्ध हैं। ये दोनों अपूर्ण हैं और इनकी श्लोक-संख्या क्रमशः १३६ और १०० है।

पञ्चम पाण्डुलिपि के विषय में कविराज जी ने मात्र यह सूचना दी है कि यह एशियाटिक सोसाइटी के सूचीपत्र की संख्या ६१०० पर उल्लिखित है।

आश्चर्य इस बात का है कि म. म. गोपीनाथ कविराज जी ने वाराणसी में रहते हुए भी वहाँ के संस्कृत विश्व-विद्यालय में सुरक्षित पाँच पाण्डुलिपियों के आधार पर 'शाबर' मन्त्रों के विषय में विशेष कुछ भी प्रकाश नहीं डाला है।

'उ. प्र. हिन्दी संस्थान' द्वारा प्रकाशित 'हिन्दू धर्म-कोश' में उसके सम्पादक डॉ. चन्द्रबली पाण्डेय ने **'शाबर'**-शब्द को अपने 'कोश' में स्थान तक नहीं दिया है--यद्यपि **'शबर-शङ्कर-विलास'**, **'शबर स्वामी'** (पृष्ठ ६१६), **'शाबर भाष्य'** (पृष्ठ ६२७) जैसे शब्दों को उन्होंने सम्मिलित किया है।

श्रीतारानाथ तर्क-वाचस्पति भट्टाचार्य द्वारा सङ्कलित एवं चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी द्वारा प्रकाशित प्रख्यात 'वृहत् संस्कृताभिधानम्' (कोष) में भी 'शबर' या 'शाबर'-शब्दों को स्थान नहीं मिला है, किन्तु 'शम्ब', 'शम्बर', 'शम्बर-कन्द', 'शम्बर-चन्दन', 'शम्बर-सूदन', 'शम्वरारि', 'शम्वरी' और 'शाम्बरी' शब्दों के जो अर्थ दिए हैं, वे मननीय हैं। उदाहरण के लिए 'शाम्बरी' का अर्थ यहाँ शब्दशः उद्धृत किया जाता है—

शाम्बरी—स्त्री, शम्बरेण निर्वृत्ता, अण् ङीप्। मायायाम् इन्द्र-जालादौ अमरः।

प्रख्यात कोषकार वामन शिवराम आप्टे ने अपने संस्कृत-अंग्रेजी कोश में 'शबर', 'शम्बर' आदि शब्दों के अर्थ दिए हैं। यथा—

शबरः—राजन् गुञ्जा-फलानां स्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति।

शम्बर—प्रद्युम्न द्वारा मारा गया एक असुर।

शम्बरी—जादूगरनी।

शाबर/शावर, शाबरी—१ जङ्गली, २ प्राकृत भाषा का विकृत रूप, जिसे पर्वतीय लोग बोलते हैं।

अन्त में 'भारत - रत्न' महा-महोपाध्याय डा० पाण्डुरङ्ग वामन काणे कृत वृहत् **'धर्म-शास्त्र का इतिहास'** का भी उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है। इस वृहत् ग्रन्थ के पाँच खण्ड हैं, किन्तु किसी भी खण्ड में 'शबर मन्त्रों' के विषय में कुछ भी प्रकाश नहीं डाला गया है। हाँ, प्रथम भाग के पृष्ठ १३७ पर और द्वितीय भाग के पृष्ठ ६५५-५८ में **'शबर'**-शब्द के सम्बन्ध में तथा चतुर्थ भाग के पृष्ठ ६७ पर 'शबरोत्सव' के विषय में जो कुछ विवरण दिया गया है, उसका सारांश यहाँ उद्धृत किया जाता है—

शबर—भिल्ल के समान जङ्गली आदि-वासी। महा - भारत में इनका वर्णन है (अनुशासन - पर्व ३५/१७, शान्ति-पर्व ६५/१३)।

शबरोत्सव-शारदीय नवरात्र की 'दुर्गा-पूजा' की दशमी तिथि को देवी-प्रतिमा के जल-प्रवाह के उपरान्त 'शबरोत्सव' होता है। इसका अर्थ यह है कि शबरों (वन - वासी, भील आदि) से सम्बन्धित कृत्य (आनन्दाभिव्यक्ति के रूप में) किए जाने चाहिए। 'काल-विवेक' में आया है कि लोग विसर्जन के उपरान्त शबरों की भाँति पत्तियों से

देह को ढँककर, कीचड़ आदि से शरीर को पोतकर नृत्य, गान एवं सङ्गीत में प्रवृत्त हो आनन्दातिरेक से प्रभावित हो जायँ। ...'कालिका-पुराण' (६२/२० एवं ४३, ६२/३१) में क्रीड़ा-कौतुक, मङ्गल एवं शबरोत्सव आदि का उल्लेख है। 'शबरोत्सव' से यही अर्थ निकाला जा सकता है कि देवी की दृष्टि में सभी लोग बराबर हैं, अतः सबको एक साथ मिलकर आनन्दोत्सव मनाना चाहिए।...

अपने इस 'वृहत् इतिहास' में 'भारत - रत्न' काणे जी ने हिन्दू-धर्म-सम्बन्धी प्रायः सभी बातों पर विस्तार से प्रामाणिक प्रकाश डाला है, किन्तु इसके पाँचवें खण्ड को पढ़ने से विदित होता है कि भारत की 'मन्त्र-विद्या' के सम्बन्ध में उन्हें या तो ज्ञान नहीं था, या वे 'साम्प्रदायिक दुराग्रह' से इतने सङ्कीर्ण हो चुके थे कि उन्हें मन्त्र-तन्त्र-सम्बन्धी भारतीय अध्यात्म - विज्ञान में केवल 'अश्लीलता' ही दिखाई दी और इसके फल-स्वरूप उक्त खण्ड के प्रथम दो अध्यायों में **'तान्त्रिक सिद्धान्त एवं धर्म-शास्त्र'** तथा **'न्यास, मुद्राएँ, मन्त्र, चक्र, मण्डल आदि'** शीर्षकों के अन्तर्गत जो कुछ लिखा है, उससे जिज्ञासु पाठकों को कुछ 'उपलब्धि' होने के स्थान पर 'खिन्नता' ही होती है।

उदाहरण के लिए **'तन्त्र-शास्त्र'** के महत्त्व को सर्व-प्रथम विश्व में उजागर करनेवाले आर्थर एवलन (सर जॉन वुडरफ) के सम्बन्ध में उन्होंने जो टिप्पणियाँ की हैं, उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं—

"सर जॉन वुड्रौफ ने प्रिंसिपुल्स आव तन्त्र' (भाग २, पृ० ६) में कहा है कि मांस, मत्स्य एवं मदिरा का प्रयोग वैदिक काल में सर्व-साधारण था तथा महा - भारत एवं पुराणों में (यथा कालिका, मार्कण्डेय, कूर्म आदि) मद्य, मांस एव मत्स्य के सेवन करने की ओर सङ्केत हैं। **यह कथन एक विशेष समर्थन है और गुमराह (पथ-भ्रष्ट) करनेवाला है।"** (पञ्चम भाग, पृष्ठ ३७)

" .....आर्थर एवालोन ने 'परमानन्द सूत्र' (पृष्ठ १७) में प्रयुक्त 'पीने' की अलौकिक अर्थ (गुप्त या गूढ़ अर्थ) में व्याख्या की है। यह व्याख्या अति गम्भीर एवं उत्कृष्ट रूप से मानसिक है। **किन्तु किसी प्रकार भी प्रतीति में बैठनेवाली नहीं है।** (वहीं, पृष्ठ ४३)

"……वुड्रोफ ने मद्य की जो व्याख्या की है……वह भूल-भुलैया मात्र है, **उससे कुछ अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता**……।" (वहीं)

स्पष्ट है कि इस प्रकार की '**विरोधी**' टिप्पणियाँ असावधान पाठक को भ्रम में ही डालेंगी।

काणे जी की सङ्कीर्ण मनोवृत्ति की सूचक एक अन्य टिप्पणी निम्न प्रकार है—

"……शारदातिलक **जैसे गम्भीर ग्रन्थ ने भी दुष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए** यन्त्रों के आलेखन की अनुमति दी है।… ·"

(वहीं, पृष्ठ ७६)

यहाँ यह विचारणीय है कि जिन उद्देश्यों को काणेजी 'दुष्ट' मानते हैं, उन्हीं की पूर्ति के लिए अधिकांश '**शबर**' मन्त्रों का प्रयोग अति प्राचीन काल से होता आया है। अतः विरोधी भाव के कारण '**शबर-मन्त्र-जाल**' के विषय में विवरण देना 'भारत-रत्न' को कैसे रुचिकर हो सकता था ? यही बात अन्य 'कोश-कारों' के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। यदि 'ग्रन्थकार' स्वयं किसी विषय का विरोधी है, तो वह उसकी उपेक्षा ही करेगा। स्वयं काणे जी ने पाँचवें खण्ड के पृष्ठ ६६ में इस तथ्य को प्रकारान्तर से स्वीकार किया है। यथा—

"……तान्त्रिक सिद्धान्तों एवं आचारों से सम्बन्धित इस अध्याय के अन्त में एक 'विचित्र' बात की चर्चा कर देना आवश्यक है—सायण-माधव भाइयों (१४वीं शती) ने 'सर्व-दर्शन-संग्रह' नामक ग्रन्थ में १५ दर्शनों की चर्चा की है, किन्तु **आश्चर्य की बात यह है कि इन लोगों ने 'तन्त्रों' के विषय में एक शब्द भी नहीं लिखा है**। ऐसा मानना असम्भव है कि इन विद्वान् दो भाइयों को 'तन्त्र' के विषय में ज्ञान नहीं था। यदि कल्पना का सहारा लिया जाय, तो ऐसा कहा जा सकता है कि तब तक तन्त्र-ग्रन्थ समाज में पर्याप्त रूप से अरुचिकर हो चुके थे और **विद्वान् लोग उनका विरोध करने लग गए थे**।…"

हम भी 'भारत-रत्न' काणे जी की 'कल्पना' के इस अंश से सहमत हैं कि विद्वान् लोग तन्त्र-ग्रन्थों का विरोध करने लगे थे, किन्तु इस अंश से कोई भी सत्यान्वेषी सहमत नहीं हो सकता कि समाज में तन्त्र-ग्रन्थ पर्याप्त रूप से अरुचिकर हो चुके थे। इसके विपरीत

सत्य यह है कि समाज में तन्त्र - ग्रन्थ बराबर रुचिकर रहे। यहाँ तक कि लोग उन्हें छिपाकर सुरक्षित रखे रहे और **गुप्त रूप से उनके अनुसार साधना कर अपनी इष्ट - सिद्धि भी प्राप्त करते रहे।**

'पद्म - विभूषण' महा-महोपाध्याय गोपीनाथ जी कविराज अपने 'तान्त्रिक साहित्य' में या अपनी अन्य किसी कृति में 'शाबर' मन्त्रों के विषय में जान - बूझ कर इसीलिए कुछ भी नहीं लिख सके क्योंकि उन्हें भय था कि विरोधी विद्वान् उनकी आलोचना करने लगेंगे।

अस्तु, अब कदाचित् समय आ गया है कि **'शाबर-मन्त्र - विज्ञान'** पर विधि-वत् शोध किया जाय। इस युग के महान् मनीषी 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त जी शुक्ल द्वारा प्रवर्तित मासिक पत्रिका **'चण्डी'** विक्रम सम्वत् की २१वीं शती के अर्द्ध-शतक के अन्त में अपने 'स्वर्ण-जयन्ती' वर्ष में प्रवेश कर रही है, इस शुभ काल में यह महत् कार्य भी सम्पन्न हो जाय, तो यह उसके अनुरूप ही होगा।

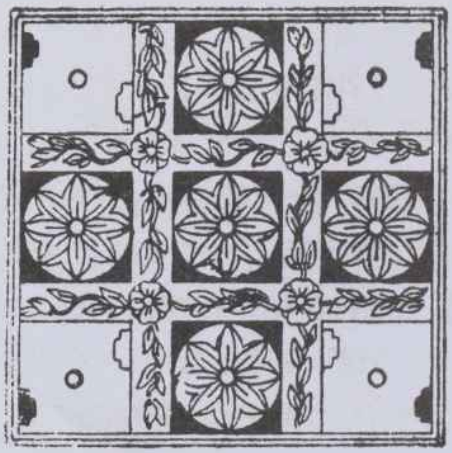

शाबर-मंत्र-साधना

में

गुरु-तत्त्व

कोई भी आध्यात्मिक साधना हो, उसमें सफलता श्री गुरु-कृपा से ही मिल पाती है। शाबर मन्त्रों में तो 'गुरु' या 'गुरू' - शब्द का उच्चारण अनेकशः और प्रबल भाव से करने का नियम है। अतः 'शाबर मन्त्र' की साधना में 'गुरु - तत्त्व' को समझ लेना परमावश्यक है। इस सम्बन्ध में 'गुरु तन्त्र', 'श्री गुरु - तत्त्व-दर्शन' और 'श्री गुरु-साधना' जैसी अनेक उपयोगी कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। यहाँ उस सम्बन्ध में प्रकाश डालना केवल पुनरुक्ति मात्र होगी।

आवश्यकता है यह समझने की कि 'शाबर' मन्त्रों के सम्बन्ध में श्रीगुरुदेव के रूप में किनका स्मरण साधक को करना चाहिए। आदि-गुरु तो भगवान् सदा - शिव, शङ्कर, भोलेनाथ, महा - देव ही हैं। उन्हीं के अवतार - स्वरूप 'नव-नाथ' ही 'शाबर - मन्त्र - विज्ञान' के प्रचारक लौकिक गुरु माने गए हैं। इन नाथों के सम्बन्ध में निम्न पद्यात्मक साहित्य से जिज्ञासुओं को बहुत कुछ ज्ञान हो सकेगा—

१. नव-नाथ-माला

'आदि-नाथ' महेश आकाश-रूप छाय रहे।
'उदय-नाथ' पार्वती पृथ्वी-रूप भाए हैं।
'सत्य-नाथ' ब्रह्मा जी जिनका है जल-रूप।
वही तो कृपा कर सृष्टि को रचाए हैं।
विष्णु 'सन्तोष-नाथ' तेज खाँडा खड्ग-स्वरूप।
राज-पाट-अधिकारी वही तो कहाए हैं।
अचल 'अचम्भेनाथ' जिनका है शेष - रूप।
पृथ्वी का भार सब शीश पर उठाए हैं।

गज-बली 'कन्थभ-नाथ' सिद्धि देता हार।
हस्ति - रूपी घाड़ गण - पति कहलाए हैं।
ज्ञान-पारखी चन्द्रमा-सिद्ध हैं 'चौरङ्गी-नाथ'।
अठार भार वनस्पति में वही समाए हैं।
माया-पति दादा-गुरु कृपालु 'मत्स्येन्द्र-नाथ'।
सब ही को अन्न - धन - कपड़ा पुराए हैं।
गुरु तो 'गोरक्ष-नाथ' स्वयं ज्योति-स्वरूप जो।
विश्व भर योग-शक्ति उदार फैलाए हैं।
बड़े हैं जो भाग्य-वन्त जिन योग प्राप्त किया।
नव - नाथ 'नव-नाथ' गुरु - गण गाए हैं।
नाथ ये त्रिलोक 'नव-नाथ' को नमन कर।
नव - नाथ - नाम शुभ मेरे मन भाए हैं॥

॥ दोहा ॥

श्री 'नव-नाथ' को चिनऊँ, दीजिए शुभ आशीष।
आप ही मम सर्वस्व हैं, आपहि हैं मम ईश॥
करें कृपा मुझ दोन पर, करूँ सुयश गुण-गान।
'नव-नाथ-माला' शुभ गुनूँ, कीजिए बुद्धि प्रदान॥
जिसके पठन-श्रवण से, मिटे त्रिविध भव-ताप।
अचल मोक्ष-पद-पावहीं, जपिहैं जो चित लाय॥

२. नव-नाथ-स्वरूप

'आदि-नाथ' सदा-शिव हैं जिनका आकाश-रूप,
'उदय - नाथ' पार्वती पृथ्वी - रूप जानिए
'सत्य - नाथ' ब्रह्मा जी जल-रूप मानिए,
विष्णु 'सन्तोष-नाथ' तिनका है तेज-रूप

अचल हैं 'अचम्भेनाथ' जिनका है शेष-रूप,
गज-बली 'कन्थभनाथ' हस्ति-रूप जानिए ।
ज्ञान-पारखी जो सिद्ध हैं वह 'चौरङ्गीनाथ',
अठार भार वनस्पति चन्द्र-रूप जानिए ।
दादा-गुरु 'श्रीमत्स्येन्द्र-नाथ' जिनका है माया-रूप,
गुरु 'श्रीगोरक्ष-नाथ' ज्योति-रूप जानिए ।
बाल हैं त्रिलोक, 'नव-नाथ' को नमन करूँ,
नाथ जी ये बाल को अपना ही जानिए ।।

३. नव-नाथ-चरित

।। दोहा ।।

'आदि-नाथ' आकाश-सम, सूक्ष्म रूप ॐकार ।
तीन लोक में हो रहा, आपनि जय-जय-कार ।।१।।

।। चौपाई ।।

जय-जय-जय कैलाश-निवासी, योग-भूमि उतर-खण्ड-वासी ।
शीश जटा सु-भुजङ्ग विराजै, कानन कुण्डल सुन्दर साजे ।।२
डिमक-डिमक-डिम डमरू बाजे, ताल मृदङ्ग मधुर ध्वनि गाजे ।
ताण्डव नृत्य किया शिव जब ही, चौदह सूत्र प्रकट भे तब ही ।।३
शब्द-शास्त्र का किया प्रकाशा, योग-युक्ति राखे निज पासा ।
भेद तुम्हारा सबसे न्यारा, जाने कोई जानन-हारा ।।४
योगी-जन तुमको अति प्यारे, जरा-मरण के कष्ट निवारे ।
योग प्रकट करने के कारण, 'गोरक्ष' स्वरूप किया धारण ।।५
ब्रह्म-विष्णु को योग बताया, नारद ने निज शीश नवाया ।
कहाँ तलक कर वरनूँ गाथा, आदि-अनादि हो आदि-नाथा ।।६

।। दोहा ।।

'उदय-नाथ' ! तुम पार्वती, प्राण-नाथ भी आप ।
धरती-रूप सु-जानिए, मिटे त्रिविध भव-ताप ।।७

।। चौपाई ।।

जय-जय-जय 'उदय'-मातृ भवानि, करो कृपा निज बालक जानी ।
पृथ्वी-रूप क्षमा तुम करतीं, दुर्गा-रूप असुर-भय हरतीं ।।८
आदि-शक्ति का रूप तुम्हारा, जानत जीव चराचर सारा ।
अन्नपूर्णा बन के जग पाला, धन्यो रूप सुन्दरी बाला ।।९
ब्रह्मा-विष्णु भी शीश नमाएँ, नारद-शारद मिल गुण गाएँ ।
योग-युक्ति में तुम सहकारी, तुझे सदा पूजें नर-नारी ।।१०
योगी-जन पर कृपा तुम्हारी, भक्त-भीड़-भय-भञ्जन-हारी ।
मैं बालक तुम मातृ हमारी, भव - सागर से तुरतहिं तारी ।।११
कृपा करो मो पर महरानी, तुम सम न कोइ दूसर दानी ।
पाठ करै जो ये चित लाई, 'उदय-नाथ' जी होंइ सहाई ।।१२

।। दोहा ।।

'सत्य-नाथ' हैं सृष्टि-पति, जिनका है जल - रूप ।
नमन करत हैं आपको, स - चराचर के भूप ।।१३

।। चौपाई ।।

जय-जय-जय 'सत्य-नाथ' कृपाला, दया करो हे दीन-दयाला ।
करके कृपा यह सृष्टि रचाई, भाँति-भाँति की वस्तु बनाई ।।१४
चार वेद का किया उचारा, ऋषि-मुनि मिल के किया विचारा ।
सनत् सनन्दन - सनत्कुमारा, नारद-शारद गुण-भण्डारा ।।१५
जग हित सबको प्रकटित कीन्हा, उत्तम ज्ञान योगी-पद दीन्हा ।
पाताले भुवनेश्वर सुन्दर, सत्य-धाम-पथ धाम मनोहर ।।१६
कुरु-क्षेत्रे पृथूदक सुन्दर, 'सत्य-नाथ' योगी कहलाए ।
आपन महिमा अगम अपारा, जानत है त्रिभुवन सारा ।।१७
आशा-तृष्णा निकट न आए, माया-ममता दूर नसाए ।
'सत्य-नाथ' का जो गुण गाएँ, निश्चय उनका दर्शन पाएँ ।।१८

।। दोहा ।।

विष्णु तो 'सन्तोष-नाथ', खाँड़ा खड्ग-स्वरूप ।
राज-सम दिव्य तेज है, तीन लोक का भूप ।।१९

।। चौपाई ।।

जय-जय-जय श्री स्वर्ग-निवासी, करो कृपा मिटे काम फाँसी ।
सुन्दर रूपे विष्णु-तन धारे, स-चराचर के पालन-हारे ।।२०

सब देवन में नाम तुम्हारा, जग-कल्याण-हित लेत अवतारा।
जग-पालन का काम तुम्हारा, भीड़ पड़े सब देव उबारा ॥२१

योग-युक्ति 'गोरक्ष' से लीन्हो, शिव प्रसन्न हो दीक्षा दीन्हो।
शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारी, कान में कुण्डल शुभ-कारी ॥२२

शेषनाग की सेज बिछाई, निज भक्तन के होत सहाई।
ऋषि-मुनि-जन के काज सँवारे, अधम दुष्ट पापी भी तारे ॥२३

देवासुर-संग्राम छिड़ाए, मार असुर-दल मार भगाए।
'सन्तोष-नाथ' की कृपा पाएँ, जो चित लाय पाठ यह गाएँ ॥२४

॥ दोहा ॥

शेष रूप है आपका, अचल 'अचम्भेनाथ'।
आदि-नाथ के आप प्रिय, सदा रहें उन साथ ॥२५

॥ चौपाई ॥

जय-जय-जय योगी अचलेश्वर, सकल सृष्टि धारे शिव ऊपर।
अकथ अथाह आपकी शक्ति, जानो पावन योग की युक्ति ॥२६

शब्द-शास्त्र के आप नियन्ता, शेषनाग तुम हो भगवन्ता।
बाल यती है रूप तुम्हारा, निद्रा जीत क्षुधा को मारा ॥२७

नाम तुम्हारा बाल गुन्हाई, टिल्ला शिवपुरी धाम सुहाई।
सागर मथन की हुइ तैयारी, देव दैत्यकी सेना भारी ॥२८

पर-दुख-भञ्जन पर-हित काजा, नेति आप भये सिद्ध राजा।
सागर मथा अमृत प्रकटाया, सब देवन को अमर बनाया ॥२९

यतियों में भी नाम तुम्हारा, योगियों में सिद्ध-पद धारा।
नित ही बाल-स्वरूप सुहाए, अचल अचम्भेनाथ कहाए ॥ ३०

॥ दोहा ॥

'गज-बलि' गज के रूप हैं, गण-पति 'कन्थभ-नाथ'।
देवों में हैं अग्र-तम, सब ही जोड़ें हाथ ॥३१

॥ चौपाई ॥

जय-जय-जय श्रीकन्थभ देवा, हो कृपा मैं करूँ नित सेवा।
मोदक हैं अति तुमको प्यारे, मूषक - वाहन परम सुखारे ॥३२

पहले पूजा करे तुम्हारी, काज होंय शुभ मङ्गल-कारी।
कीन्हि परीक्षा जब त्रिपुरारी, देखि चतुरता भये सुखारी ॥३३
ऋद्धि-सिद्धि चरणों की दासी, आप सदा रहते वन-वासी।
जग हित योगी-भेष बनाये, कन्थभ नाथ सु - नाम धराये ॥३४
कन्थ कोट में आसन कीन्हा, चमत्कार राजा को दीन्हा।
सात बार तो कोट गिराए, बड़े - बड़े भूपनहिं नमाये ॥३५
वसुनाथ पर कृपा तुम्हारी, करी तपस्या कूप में भारी।
भेक कापड़ी शिष्य तुम्हारे, करो कृपा हर विघ्न हमारे ॥३६

॥ दोहा ॥

ज्ञान - पारखी सिद्ध हैं, चन्द्र चौरङ्गि नाथ।
जिनका वन-पति रूप है, उन्हें नमाऊँ माथ ॥३७

॥ चौपाई ॥

जय-जय-जय श्री सिद्ध चौरङ्गी, योगिन के तुम नित हो सङ्गी।
शीतल रूप चन्द्र अवतारा, सदा बरसो अमृत की धारा ॥३८
वनस्पति में अंश तुम्हारे, औषधि के सुख भये सुखारे।
शालिवान है वंश तुम्हारा, बालपने योगी तन धारा ॥३९
अति सुन्दर तव सुन्दरताई, सुन्दरि रानी देख सुभाई।
गुरू-शरण में रानी आई, हाथ जोड़ यह विनय सुनाई ॥४०
शिष्य आपका मुझे चाहिए, नहीं तो प्राण तन में बहिए।
सुनकर गुरु जी करुणा कीन्हीं, जब तुझे यही आज्ञा दीन्हीं ॥४१
रानी संग चले मति पाई, जाय महल में ध्यान लगाई।
रानी ने तब शीश नमाया, हुए अदृश्य भेद नहिं पाया ॥४२

॥ दोहा ॥

माया - रूपी आप हैं, दादा मछन्द्रनाथ।
रखूँ चरण में आपके, करो कृपा मम माथ ॥४३

॥ चौपाई ॥

जय-जय-जय अलख दया-सागर, मत्स्य में प्रकट जय करुणाकर।
अमर कथा श्री शिवहिं सुनाई, गौरी के जो मन को भाई ॥४४

सूक्ष्म वेद जो शिवहि सुनाया, गर्भ में आपने वह पाया।
जाकर अपना शीश नवाया, उमा महेश सु-वचन सुनाया ॥४५
जीव जगत का कर कल्याणा, ले आशीष चले भगवाना।
सिंहल द्वीप सु-राज चलाया, सारे जग में यश फैलाया ॥४६
कदली-वन में किया निवासा, योग-मार्ग का किया प्रकाशा।
माया-रूपहि आप सुहाएँ, जग को अन-धन - वस्त्र पुराएँ ॥४७
दादा पद है आपन सुन्दर, करें कृपा निज भक्त जानकर।
महिमा आपकी महा भारी, कहि न सके मति मन्द हमारी ॥४८

॥ दोहा ॥

शिव गोरख शिव-रूप हैं, घट-घट जिनका वास।
ज्योति - रूप में आपने, किया योग प्रकाश ॥४९

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गोरख गुरुज्ञानी, योग-क्रिया के तुम हो स्वामी।
बालरूप लघु जटा विराजै, भाल चन्द्रमा भस्म तन साजै ॥५०
शिवयोगी अवधूत निरञ्जन, सुर-नर-मुनि सब करते वन्दन।
चारों युग के आपहि योगी, अजर अमर सुधा-रस भोगी ॥५१
योग-मार्ग का किया प्रचारा, जीव असंख्य अभय कर जारा।
राजा कोटि निभाने आए, देकर योग सब शिष्य बनाए ॥५२
तुम शिव गोरख राज अविनाशी, गोरक्षक उत्तरापथ-वासी।
विश्व-व्यापक योग तुम्हारा, 'नाथ-पन्थ' शिव-मार्ग उदारा ॥५३
शिव गोरख के शरण जो आएँ, होय अभय अमर-पद पाएँ।
जो गोरख का ध्यान लगाएँ, जरा-मरण नहिं उसे सताएँ ॥५४

॥ दोहा ॥

माला यह नव-नाथ की, कण्ठ करे जो कोइ।
कृपा होय नव-नाथ की, आवागमन न होइ ॥५५
नव-नाथ - माला सु-रची, तुच्छ मती अनुसार।
त्रुटि क्षमा करें योगि-जन, कर लेना स्वीकार ॥५६
नहिं विद्या में निपुण हूं, नहिं है ज्ञान विशेष।
योगी-जन गुरु - पूजा को, करता हूं आदेश ॥५७

।। पाठ-विधि और फलादेश ।।

कर स्नान शुद्ध प्राणायाम करें बैठ कर,
आम पीपल आदि की समिधा जलाइए।
धूनी की पूजा कर प्रेम सहित, गोकुल धूप करें,
नव-नाथ - माला का पाठ नित्य सुनाइए ।।
एक सौ आठ बार माला पठन करे,
नव - नाथ - माला प्रेम से फिराइए।
अष्ट-सिद्धि नव-निधि मुक्ता-माल प्राप्त हो,
माला के प्रताप में मोक्ष - फल पाइए ।।
आशा और तृष्णा निकट नहीं आएँगी,
जरा-मरण आधि-व्याधि तुझे न सताएँगी।
नव-नाथ - माला के पठन - प्रभाव से,
भूत - प्रेत - चोर आदि कभी न डराएँगे।
बाल ये त्रिलोक नव-नाथ के आशिष से,
होइगी जो इच्छा शीघ्र वही फल पाएँगे ।।

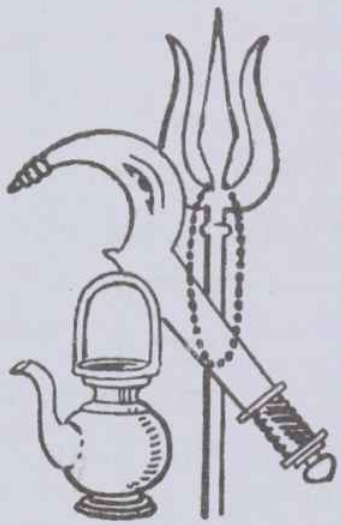

शाबर-मन्त्र-सप्तक

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीभैरवानन्दनाथ
अध्यक्ष, शाम्भवी तान्त्रिक शोध-संस्थान, १०८ चकराघाट, सागर–२ (म० प्र०)

१. 'स्व-रक्षा' और 'शत्रु-त्रासन' हेतु श्री वीर भैरों मन्त्र

हमें जो सतावै, सुख न पावै सातों जन्म ।
इतनी अरज सुन लीजै, वीर भैरों ! आज तुम ।।
जितने होंय सत्रु मेरे, और जो सताय मुझे ।
वाही को रक्त-पान, स्वान को कराओ तुम ।।
मार-मार खड्गन से, काट डारो माथ उनके ।
मास रक्त से नहावो, वीर भैरों ! तुम ।।
कालका भवानी, सिंह-वाहिनी को छोड़ ।
मैंने करी आस तेरो, अब करो काज इतनो तुम ।।

विधि—सवा सेर बूँदी के लड्डू, नारियल, अगरबत्ती और लाल फूलों की माला से श्री वीर भैरव का पूजन कर २१ दिनों तक नित्य १०८ बार पाठ करें। बाद में आवश्यक होने पर ७ बार नित्य पाठ करते रहें, तो स्वयं की रक्षा होती है और शत्रु - वर्ग का नाश होता है ।

२. अर्श (बवासीर) नाशक मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को ।
खुरासान सूं आया वीर, छप्पन सूर सङ्ग में तीर ।
सीस कटै और खून न आवै, टपका एक पड़न नहिं पावै ।।
खूनी बादी कैसी होय, करो दूर पीड़ा कम होय ।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

विधि—धूप और कपूर जलाकर १०,००० बार पाठ करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होगा। फिर रोगी को बिठाकर १-१ बार मन्त्र पढ़ते हुए चाकू से भूमि पर लकीरें खींचता जाए। इस प्रकार ३१ बार मन्त्र पढ़ते हुए ३१ लकीरें खींचे। बवासोर के मस्से कट जाएँगे और खून नहीं निकलेगा।

३. भूत-प्रेत-नाशक श्री हनुमान जी का 'झाड़ा'—मन्त्र

जयति हनुमान जो, नित ध्यान धरूँ।
सेऊँ वीर हनुमान, जटा-जूट अवधूत जङ्ग जञ्जीर॥
लँगोट गाढ़ा भूत को बस कर, प्रत को बस कर, गदा की मार दे,
तेल सिन्दूर फल-फूल पान मङ्गल चढ़े, आप देखें जब रोट होवे।
सत्य की नाव नरसिङ्ग खेवे, दुष्ट के लात बजरङ्ग देवे॥
तोड़ वज्र किवाड़ वक्त को कड़ो।
चार लाख अस्सी हजार बस कर, रावण के दीनी धड़ा-धड़ी॥
सत्य वीर हनुमान, बरस बारह के जवान,
हाथ में लड्डू—मुख में पान। सीता को खोजन गए,
तो मो-से पतित अनाथ की नहीं करोगे का महाराज ?
हनुमन्ता गुणवन्ता गाजन्ता घोरन्ता, डगरी बैठ राज करन्ता।

ऋद्धि लाओ, सिद्धि लाओ, राजा-परजा बस कर, बड़ो वेग मेरे पास लाओ। मेरे पास बड़ी वेग नहीं लाओगे, तौ माता अञ्जनी का दूध पिया, हलाल से हराम कराओगे। बड़ी बार वेग लाओगे, तो माता अञ्जनी का दूध पिया हल्लाल करोगे। यही पान का बीड़ा तुम्हारी भेंट है। जो वाचा चूके, तो ऊभ्यौरी सूखे। मेरे हँकारे नहीं हँकौगे, तो माता अञ्जनी की दुहाई, नरसिंह पिता की दुहाई, आदि-पुरुष की दुहाई, सती सीता की दुहाई। देखूँ हनुमन्ता वीर ! तेरी शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—मङ्गलवार से मङ्गलवार तक हनुमान जी का पूजन कर १०८ वार जपें। अन्तिम दिन हनुमान जी को सिन्दूर का चोला, लँगोट, ध्वजा, नारियल आदि अर्पित करें। फिर १ या ३ बार मन्त्र पढ़ते हुए मोर-पङ्ख द्वारा झाड़ने से भूत-प्रेत आदि भाग जाते हैं।

४ जमुए (धनुष्टङ्कार, टिटनेस) का मन्त्र

सुन रे जमोगे, मत कर अभिमान ।
तेरा नहीं दुनिया में ठिकान ।।
बालक दिया है श्रीभगवान ।
बचोगे नहीं तू जमीं आसमान ।।
दुहाई औघड़ की छू, खेद के मारता हूँ बान ।।

विधि—राम-सर का तीर-कमान बनाकर उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को तीर मारे, तो 'जमुआ' दूर होगा । नित्य ३ बार मन्त्र पढ़कर तीन तीर मारे ।

५. अण्ड-वृद्धि, गर्भ गिराने, साँप भगाने और खेती सुखाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को । जैसे कैलेहु रामचन्द्र के बूत,
ओंसई कर राघविनीं के बूत, पवन-पूत हनुमान वाड हर हर,
रावन कूट निरावन स्रवई, अण्ड से ताहि स्रवई, अण्ड-अण्ड
विहण्ड खेतहि स्रवई वाजं, गर्भहि स्रवई स्त्री पोलहि स्रवई,
शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर ।।

विधि—उक्त मन्त्र द्वारा ३ बार अभिमन्त्रित जल पुरुष को पिलाने से अण्ड-वृद्धि दूर हो । स्त्री को पिलाने से दो-तीन माह का गर्भ गिरे । मिट्टी का एक ढेला ३ बार अभिमन्त्रित कर साँप के बिल पर रखे, तो साँप भाग जाए । तीन ढेलों को अभिमन्त्रित कर खेत के तीन कोनों में फेंके, तो खेत सूख जाए । खेत बोए अधिक दिन न हुए हों, तभी काम करेगा ।

६. वशीकरण-मन्त्र

मैं तोह मोहों मोहिनी, तू मोहे संसार । बाट के बटोहिया मोहे,
कुंआ की पनिहारी मोहे, पलना बैठी रानी मोहे ।
दुलीचा बैठो राजा मोहै, ठग मोहे, ठाकुर मोहे, पर-घर मोहे ।
सब जात मोह ले, 'अमुक' को मोहाईले । मेरे पाइन तर आन राख ।
उलटन्त वेद, पलटन्त कत काया, तोहि श्रीनरसिंह बुलाया ।
मेरी भगत, गुरू को सकत, फुरै मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

विधि--जिसे वश में करना हो, उसका नाम **'अमुक'** शब्द के स्थान पर जोड़कर नित्य १०८ बार जप करने से कुछ दिनों में साध्य अथवा साध्या का वशीकरण होता है।

७. वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का। मोहिनी मोहिनी कहाँ चली। बाहर खुदाई काम कन चली। फलानी फलाने को देखै, जरै मरै। मेरे को देखकर पायन पड़ै। छू मन्त्र काया, आदेश, गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

विधि--पहले किसी शुभ मुहूर्त में सरसों या राई के तेल का होम देकर १०८ बार जपे, तो मन्त्र सिद्ध होगा। फिर किसी भी खाने-पीने की वस्तु पर ७ बार मन्त्र पढ़कर खिलाने - पिलाने से वशीकरण होगा। **'फलानी फलाने'** पद के स्थान में 'साध्या' और 'उसके पति' के नाम का उच्चारण किया जाए। यदि 'साध्या' 'अविवाहिता' हो, तो 'उसके पिता' का नाम ले।

कुबेर भाण्डार (ऋद्धि-सिद्धि) गायत्री

'सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! ॐ गुरु जी! ॐ सोहं - आकाश 'डिम्बी', पाताल कोठी, धर्ती का चुलही करूँ, आकाश का दीया, नवनाथ, चौरासी सिद्धों ने बैठकर भण्डार किया। चढ़े 'डिब्बी', उतरे ऋद्धि - सिद्धि। 'काली - पीली' शिर जटा, माई पार्वती का उपदेश! शिव - मुख आवे, शक्ति-मुख जावे। शक्ति मुख आवे, शिव-मुख जावे। हात खड्ग, 'तूंत' की माला, जाप जपे श्री सुरिया बाला। ऋद्धि पूरे हर, घृत पूरे गणेश, अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महा-काली, हीरा पूरे हिङ्गलाज, नव-खण्ड में जोत जगाई! ऋद्धि लाओ, भाण्डारी भाई! ऋद्धि खूंटे, सदा-शिव का जड़ाव टूटे। ऋद्धि खूंटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे। ऋद्धि खूंटे, पार्वती का कमल-कङ्कन टूटे। ऋद्धि खूंटे, मान धान का टूटे। चन्द्र-सूर्य दो देव साखी। इतना कुबेर-भाण्डारी गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया--नाथ जी आदेश, आदेश!

शाबर-मन्त्र-दशक

प्रस्तुत-कर्त्ता : गीता प्रचार भवन, दिल्ली

१. बहु उपयोगी शाबर-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरन को, ईश्वर वाचा ।
अजरी बजरी बाड़ा बज्जरी, मैं बज्जरी बाँधा दशौ दुवार छवा ।
और के घालों, तो पलट हनुमन्त बीर उसी कों मारे ।
पहली चौकी गनपती, दूजी चौकी हनुमन्त, तीजी चौकी में भैरों,
चौथी चौकी देह, रक्षा करन कों आवें श्रीनरसिंह देव जी ।
शब्द-साँचा, पिण्ड काँचा, चले मन्त्र ईश्वरी वाचा ।

प्रयोग (१)—घर-बाहर, देश-परदेश, जङ्गल या श्मशान में, जहाँ कहीं भी रहें, इस मन्त्र को पढ़कर बैठें या रात में सो जाएँ, तो विषैले जीव, हिंसक जीव, वध करनेवाले, लूटनेवाले अथवा कोई आघात करनेवाले दूर ही खड़े रहेंगे, देह को स्पर्श नहीं कर सकेंगे । मन्त्र को पढ़ते हुए अपने चारों ओर रेखा खींच ले या जल छिड़क ले, तो 'सुरक्षा-कवच' बन जाता है ।

प्रयोग (२)—यदि कोई व्यक्ति किसी व्याधि से पीड़ित हो, पीड़ा से मारे छटपटा रहा हो अथवा अज्ञात कारणों से उसका शरीर अकड़ने लगे, मूर्च्छा आ जाए, तो इस मन्त्र द्वारा झाड़ देने पर वह व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ, प्रसन्न हो जाता है ।

प्रयोग (३)—यदि किसी घर में धन, सन्तान, पशु की वृद्धि न होती हो, कोई-न-कोई आधि-व्याधि लगी रहती हो और लोग उसे अशुभ मानकर छोड़ने के लिए तैयार हों, तो उस घर में जितने द्वार हों, उतने ही लोहे के कील और एक मुट्ठी उड़द की व्यवस्था करे। कीलों और उड़द के दानों को अलग-अलग उक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर ले । फिर मन्त्र पढ़ते हुए सबसे भीतरी कमरे में प्रवेश

करे और यही मन्त्र पढ़ते हुए उड़द के दाने फेंकते हुए कमरे के बाहर निकल आए तथा उसकी चौखट पर एक लोहे की कील इसी मन्त्र को पढ़ते हुए गाड़ दे।। इसी प्रकार क्रमशः प्रत्येक कमरे के भीतर जाकर उड़द फेंकते हुए बाहर आ उसकी चौखट पर कील गाड़ते हुए घर के बाहर आकर मुख्य द्वार में भी पूर्व-वत् कील ठोंक दे। आँगन और बरामदों में केवल उड़द के दाने बिखेरने चाहिए। मात्र इतनी क्रिया से घर के ग्रह-दोष सदा के लिए दूर हो जाते हैं।

२. रक्षा-कारक श्री हनुमान शाबर-मन्त्र

अय हनुमान ! बारा बर्स को ज्वान, हाथ में लड्डू, मुख में पान।
हाँक मारत आव, बाबा हनुमान !
मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरे मन्त्र ईश्वरी वाचा।

प्रयोग—शाबर मन्त्रों के सिद्ध शाबरी लोग उक्त मन्त्र को **'बीर को चलाना'** कहते हैं। भूत-प्रेत अथवा किसी भी प्रकार की बाधा दूर करने में इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है। इसका यह प्रत्यक्ष प्रभाव देखा गया है कि किसी व्यक्ति को ४०-५० लोगों ने घेर कर मारना चाहा। वह व्यक्ति इसी मन्त्र का साधक था। वह उच्च स्वर से इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर निहत्थे ही पैंतरा बदल कर खड़ा हो गया। किसी का भी साहस न हुआ कि उसे छू भी सके। ५ मिनट तक सभी निस्तब्ध खड़े रहे। फिर चले नहीं गए, अपितु भागते हुए उन्हें धरती नहीं मिल रही थी।

३. 'रक्षा' और 'विजय' हेतु शाबर-मन्त्र

हाथ बसें हनुमान, भैंरों बसें लिलार।
जो हनुमन्त को टीका करे, मोहे जग संसार।।
जो आवे छाती पाँव धरे, बजरङ्ग बीर रक्षा करें।
महम्मदा बीर छाती टोर, जुगुनियाँ बीर शिर फोर।।
उगुनिया बीर मार-मार भास्वन्त करे,
भैरो बीर की आन फिरती रहे, बजरङ्ग बीर रक्षा करे।
जो हमारे ऊपर घाव छाले, तो पलट हनुमान बीर उसी को मारे।
जल बाँधे, थल बाँधे, आर्या आसमान बाँधे,
कुदवा और कलवा बाँधे, चक-चक्की-असमान बाँधे।
बाबा साहिब, साहिब के पूत, धर्म के नाती ! आसरा तुम्हारा है।।

प्रयोग--अपने शत्रु और प्रतिद्वन्द्वी को परास्त कर अपनी रक्षा और विजय के लिए उक्त मन्त्र अति प्रभावी है। किसी दूसरे की रक्षा या विजय के लिए इस मन्त्र का 'गण्डा' या 'ताबीज' बनाकर देना चाहिए।

४. शत्रु-भय-निवारक, रोग - नाशक शाबर-मन्त्र

आगे दो झिलमिली, पाछे दो नन्द,
रक्षा सीताराम की, रखवारे हनुमन्त।
हनुमान हनुमन्ता आवत मूठ करौ नौखण्डा,
साँकर टोरो, लोह की फारो बजर किवार।
अज्जर कीलें, बज्जर कीलें, ऐसे रोग हाथ से ढीलें।
मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरे मन्त्र ईश्वरी वाचा।

प्रयोग--रोग-दोष, भूत-प्रेत, बाधा, भय, आशङ्का और मनोरोग दूर करने में उक्त मन्त्र उपयोगी है। शत्रु - भय - निवारण और रोग-नाशन में यह अद्वितोय है। इसे पढ़कर झाड़ा भी जाता है और इसका 'गण्डा' या 'ताबीज' भी बनाकर पहनाया जाता है।

५. भूत-प्रेत-निवारक शाबर-मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। परबत-हंस, परबत-स्वामी !
आत्म-रक्षा सदा भवेत्। नौ नाथ, चौरासी सिद्धचा की दोहाई।
हाथ में भूत, पाँव में भूत, भभूत मेरा धारण।
माथे राखो अनाड की जोत, सबको करो सिंगार।
गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा,
दोहाई भैरव के।

प्रयोग--कुछ ऐसे कीटाणु होते हैं, जिन्हें 'भूत कीटाणु' कहा जाता है। जब ये कीटाणु किसी के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं अथवा दूषित परमाणुओं के कारण शरीर में उत्पन्न हो जाते हैं, तो वह व्यक्ति उसी तरह की अस्वाभाविक बातें करने लगता है, जैसी भूत-प्रेत-बाधा होने पर देखी जाती हैं। प्रायः मासिक धर्म के दूषित होने पर स्त्रियों को यह रोग अधिक होता है। जब किसी स्त्री को यह भूत-रोग लग जाता है, तो वह मूर्च्छित हो जाती है, अनाप - शनाप बकने लगती है, अवचेतन मन में गृहीत पुरानी - से - पुरानी बातें उसे

स्मरण हो आती हैं और वह उन्हें बताने लगती है। ऐसी दशा में देव-बाधा, प्रेत-बाधा अथवा पागलपन समझकर लोग उसका उपचार करते हैं।

पुरुष या स्त्री किसी को भी यदि उक्त 'भूत-रोग' हो जाए, तो उसे सामने बैठाकर अथवा चारपाई पर लिटाकर उक्त मन्त्र से हवन कर मन्त्र पढ़ते हुए भस्म से फूंक मारकर उसके मस्तक और हृदय में भस्म लगा देनी चाहिए।

अथवा भोज-पत्र पर चन्दन से अनार की कलम द्वारा उक्त मन्त्र लिखकर इसी मन्त्र से हवन करके 'भोज - पत्र' को हवन के धुँएँ से धूपित कर, ताँबे की ताबीज में भरकर पहना देना चाहिए।

६. दूध उतारने का शाबर-मन्त्र

ॐ दमुन्दनी शाह ! दुग्धं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोग--यदि किसी सन्तानवती अथवा जिसकी गोद में दूध-पीता बच्चा हो, ऐसी स्त्री के स्तन का दूध किसी कारण-वश सूख जाए, तो गाय/भैंस के मट्ठे को उक्त मन्त्र से २१ बार फूंक कर उस स्त्री को पिला देना चाहिए। इससे उसके स्तन में दूध आ जाएगा। अधिक-से-अधिक तीन दिन तक यह प्रयोग करना पड़ता है, फिर आवश्यकता नहीं पड़ती।

७. नेत्र-विकार दूर करने का शाबर-मन्त्र

ॐ अङ्गाली बङ्गाली, अताल-पताल, गर्द-मर्द।
अदार-कदार, फट-फट उत-कट, ॐ हुं हुं ठः ठः।

प्रयोग—रविवार या मङ्गलवार को उक्त मन्त्र से १०८ बार हवन करे। इसके बाद जिसके नेत्र में कोई विकार हो, उसे रविवार और मङ्गलवार को २१ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ दे, तो उसकी उठी हुई आँखें ठीक हो जाती हैं; रोहा और अन्य नेत्र-विकार दूर हो जाते हैं।

८. सर्वोपद्रव-निवारक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का।
धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड-राख, लगाता गुरू गोरखनाथ।
आवन्ता-जावन्ता-धावन्ता हांक देत, धार-धार मार-मार।
शब्द साँचा, फुरो वाचा।

प्रयोग—कभी-कभी कुछ कारणों से किसी घर में अनेक प्रकार के उपद्रव—कलह, भय, अघटित घटनाएँ घटने लगती हैं। ऐसे उपद्रवों की शान्ति के लिए मृग-चर्म पर बैठकर उक्त मन्त्र से खीर की १०८ आहुतियाँ देने से उपद्रवों का शमन होता है।

९. अर्श (बवासीर) नाशक शाबर-मन्त्र

ॐ छाई छूई छलक छलाई, आहुम् आहुम्, क्लं क्लां क्लीं हूं।

प्रयोग—खूनी या बादी किसी प्रकार के भी अर्श (बवासीर) को जड़-मूल से नष्ट करने के लिए उक्त मन्त्र से जल को फूँक कर उससे रविवार और मङ्गलवार को शौच-स्वच्छ (आब-दस्त) किया जाए। कम-से-कम ७ रविवारों में यह प्रयोग करना चाहिए।

१०. शीतला-शान्ति-कर शाबर-मन्त्र

ॐ घट घट बैठी शीतला, फेरत आवै हाथ।
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं शब्द साँचा, फुरो वाचा।।

प्रयोग—किसी को भयङ्कर शीतला (चेचक) का प्रकोप हो, तो उक्त मन्त्र पढ़ते हुए रोगी के शरीर पर ७ बार हाथ फेरने से प्रकोप शान्त होता है। तीन दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए।

शाबर हनुमान-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सोम चैतन्य श्रीवास्तव

'कल्याण' के 'हनुमान अङ्क' से उद्धृत

१. **सिर - पीड़ा** : पीड़ित व्यक्ति को दक्षिणाभि - मुख बैठा कर उसके सिर को अपने हाथ से पकड़े। फिर निम्न 'शाबर' मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़े—

लङ्का में बैठ के माथ हिलावे हनुमन्त।
सो देखि के राक्षस-गण पराय दूरन्त॥
बैठी सीता देवी अशोक वन में।
देखि हनुमान को आनन्द भई मन में॥
गई उर विषाद, देवी स्थिर दरशाय।
'अमुक' के सिर व्यथा पराय॥
'अमुक' के नहीं कछु पीर, नहिं कछु भार।
आदेश कामाख्या हरिदासी, चण्डी की दोहाई॥

'अमुक' के स्थान पर रोगी का नामोच्चारण करना चाहिए।

२. **आधा सीसी** : निम्न-लिखित दो 'शाबर'-मन्त्रों में से किसी एक का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़े—

(१) बन में ब्याई अञ्जनी, कच्चे बन-फल खाय।
हाँक मारी हनुवन्त ने, इस पिण्ड से आधा सीसी उतर जाय॥

(२) ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल बृक्ष पै जाय।
कूद - कूद शाखा-नरी, कच्चे वन - फल खाय॥
आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय।
हङ्कारत हनुमान जी, आधा सीसी जाय॥

३. **नेत्र-रोग** : पीड़ित आँखों पर हाथ फेरते हुए निम्न मन्त्र सात बार पढ़कर फूंक मारे, तो व्यथा मिट जायगी—

ॐ नमो बने बिआई बानरी। जहाँ - जहाँ हनुवन्त आँखि पीड़ा, कषावरि गिहिया थनै लाइ, चरिउ जाइ भस्मन्तन। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥

४. **कर्ण-मूल-पीड़ा** : विभूति से निम्न मन्त्र द्वारा सात बार झाड़ने से कर्ण-रोग नष्ट होते हैं—

वनरा गाँठि वानरी, तो डाँटे हनुमान कण्ठ।
बिलारी बाँधी थनैली, कर्ण - मूल सम जाइ।
श्रीरामचन्द्र की बानी, पानी पथ होइ जाइ॥

५. **बिच्छू का विष** : निम्न-लिखित दो 'शाबर' मन्त्रों में से किसी एक के द्वारा झाड़ने से बिच्छू का विष शान्त होता है। मन्त्र का प्रयोग करने के पूर्व किसी मङ्गलवार को उसका एक लाख जप कर उसके दशांश या दस सहस्र आहुतियों द्वारा हवन कर उसे सिद्ध कर ले।

(१) पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइ की चँमरी पूँछी। तेकरे गोबरे बिछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छः कारी, छः पोअरी, छः भूमाधारी, छः रत्न-पवारी, छः कुं हुं कुं हुं छारि। उतरु बिछी हाड-हाड, पोर-पोर ते। कस मारे लील-कण्ठ गर मोर, महा-देव की दुहाई, गौरा पार्वती की दुहाई, अनीत टेहरी शडार बन छाइ, उतरहि बीछी हनुमन्त की आज्ञा, दुहाई हनुमन्त की।

(२) ॐ हरि-मर्कट मर्कटाय स्वाहा॥

६. **अण्ड-वृद्धि एवं सर्प-निवारण** : निम्न 'शाबर' मन्त्र पढ़कर फूले हुए अण्ड-कोश को हलके हाथ से मले तथा अभिमन्त्रित जल को पिलाए, तो अण्ड-वृद्धि शान्त हो जाती है—

ॐ नमो आदेश गुरू को। जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत। ओसई करहु राध बिनि कबूत। पवन - पूत हनुमन्त धाउ। हर - हर रावन कूट मिरावन। श्रवइ अण्ड, खेतहि श्रवइ, अण्ड-अण्ड विहण्ड। खेतहि श्रवइ, वाजं गर्भहि श्रवइ, स्त्री पीलहि श्रवइ शाप। हर हर केम्बीर, हर जम्बीर, हर हर हर॥

सर्प - निवारण हेतु मिट्टी के एक ढेले को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साँप के बिल पर रखे, तो साँप निकल जाता है।

७. **भूत-प्रेत-बाधा** : निम्न मन्त्र के प्रयोग से भूत - प्रेत की बाधा दूर होती है।

बाँधो भूत, जहाँ तू उपजो, छाड़ो गिरे, पर्वत चढ़ाइ, सर्ग दुहेली, तुजभि झिलिमिलाहि। हुँकारे हनुवन्त, पचारइ भीमा, जरि जारि-जारि भस्म करे. जौं चापें सींउ।

८. **चूहा-उपद्रव** : स्नान कर हल्दी की पाँच गाँठों और अक्षत को लेकर निम्न मन्त्र को पढ़कर, जहाँ चूहे आते हों, वहाँ पर या खेत में डाल दें। इससे चूहे भाग जाते हैं—

पीत पीताम्बर मूशा गाँधी ले, जाइहु हनुवन्त तु बाँधी ।।
ए हनुवन्त ! लङ्का के राउ ! एहि कोणे पैसेहु, एहि कोणे जाउ ।।

९. **सूअर और चूहा-उपद्रव** : क्रमाङ्क ८ की विधि के अनुसार ही निम्न मन्त्र का भी प्रयोग करना चाहिए—

हनुवन्त धावति, उदरहि ल्यावे, बाँधि अब खेत खाय सूअर और घर माँ रहे मूस। खेत-घर छाँड़ि, बाहर भूमि जाइ। दोहाइ हनुमान की, जो अब खेत मँह सूअर, घर मँह मूस जाइ ।।

१०. **शरीर-रक्षा** : एक हजार जप करने से निम्न मन्त्र की सिद्धि होती है। इसके बाद इस मन्त्र के तीन बार उच्चारण मात्र से कार्य-सिद्धि होती है—

ॐ नमः वज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्म का ताला। मेरे आठो याम का, यती हनुवन्त रखवाला ।।

११. **अर्श-रोग** : रात्रि के रखे हुए जल को निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शौच-समय प्रक्षालन करे, तो बवासोर नष्ट हो जाती है। एक लाख जप करनेवाले को जीवन में कभी बवासीर होती ही नहीं—

ॐ काका कता क्रोरी कर्त्ता ॐ। करता से होय यरसना, दश हंस प्रकटे। खूनी-बादी बवासीर न होय। मन्त्र जान के न बतावे, द्वादश ब्रह्म-हत्या का पाप होय। लाख जप करे, तो उसके वश में न होय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, तो हनुमान का मन्त्र साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वर वाचा ।।

१२. **पीलिया रोग** : निम्न मन्त्र से पाण्डु-रोगी को झाड़ने से पीलिया-रोग दूर होता है—

ॐ नमो वीर वैताल, असराल नारसिंह देव। खादी तुपार्दी पोलिया कूं भिदाती। कारै झारै पीलिया रहै न नेक निशान। जो कहीं रह जाय, तो हनुमान की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।।

१३. दाँत का कीड़ा : एक लाख जप से निम्न मन्त्र की सिद्धि होती है। जप का आरम्भ दीपावली की रात्रि से करना चाहिए। मन्त्र सिद्ध होने पर नीम की शाखा से झाड़ने पर पीड़ा तत्काल नष्ट हो जाती है। मन्त्रोच्चारण के साथ कागज या बाँस की नली से कीड़ेवाले दाँत को कटेरी के बीजों का धुआँ देने से कीड़े गिर जाते हैं–

ॐ नमो आदेश गुरु को। वन में ब्याई अंजनी, जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा-मकड़ा-माकड़ा– ए तीनों भस्मन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

१४. नेत्र-रोग : निम्न मन्त्र को सिद्ध कर ११ बार उच्चारण करते हुए नीम की डाली से झाड़े। लगातार तीन दिन झाड़ने से नेत्र-रोग एवं पीड़ा शान्त हो जाती है।

ॐ झलमल जहर भरी तलाई, अस्ताचल पर्वत से आई, जहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फूटै न पाकै, करै न पीड़ा, जतो हनुमन्त हरै पीड़ा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु को ।।

१५. अग्नि-काण्ड : अग्नि-काण्ड से बचने के लिए निम्न मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए–

अज्ञान बाँधो, विज्ञान बाँधो। घोरा घाट, आठ कोटि वैसन्दर बाँधो। अस्त हमारा भाइ, आनहि देखे, झझके मोहि, देखे बुझाइ, हनुमन्त बाँधो। पाना होइ जाय, अग्नि भवेत के जस मत्ती हाथी होइ, वैसन्दर बाँधो। नारायण-साखि मोरी। गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।।

हनुमत् 'साबर' मन्त्र-प्रयोग

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

हनुमच्छावरं मन्त्रं, नित्य - नाथोदितं तथा ।
वद मे करुणा-सिन्धो ! सर्व-कर्म-फल-प्रदम् ॥

॥ श्रीईश्वर उवाच ॥

आञ्जनेयाख्यं मन्त्रं च, ह्यादि-नाथोदितं तथा ।
सर्व-प्रयोग-सिद्धि च, तथाप्यत्यन्त - पावनम् ॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं यं ह्रीं राम-दूताय, रिपु-पुरी-दाहनाय अक्ष-कुक्षि-विदारणाय, अपरिमित-बल-पराक्रमाय, रावण-गिरि-वज्रायुधाय ह्रीं स्वाहा ।

विधि--'आञ्जनेय' नामक उक्त मन्त्र का प्रयोग गुरुवार के दिन प्रारम्भ करना चाहिए । श्री हनुमान जी की प्रतिमा या चित्र के सम्मुख बैठकर दस सहस्र जप करे । इस प्रयोग से सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं । मनोनुकूल विवाह-सम्बन्ध होता है । अभिमन्त्रित काजल रविवार के दिन लगाना चाहिए । अभिमन्त्रित जल नित्य पीने से सभी रोगों से मुक्त होकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है । इसी प्रकार आकर्षण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि सभी प्रयोग उक्त मन्त्र से किए जा सकते हैं । यथा—

एतद् वायु-कुमाराख्यं, मन्त्रं त्रैलोक्य-पावनम् ।
गुरु-वारे चाञ्जनेयं, समारभ्य सु-बुद्धिमान् ॥
कांक्षितां कन्यकां वाऽथ, युवाऽऽप्नोत्येव पार्वति !
आञ्जनेयस्य पुरतो, ह्ययुतं जपमाचरेत् ॥
कज्जलं च रवौ ग्राह्यं, खाने पाने च पार्वति !
दातव्यं त्रि-दिनं सम्यक्, स्वयमाकर्षणं भवेत् ॥
मन्त्रेणानेन देवेशि ! मन्त्रितं जल - पानतः ।
सर्व-रोग-विनिर्मुक्तो, जीवेद् वर्ष-शतं तथा ॥
- - - - - निशायाः कज्जलं तथा ।
- - - - - ताम्बूलं चन्दनादिकम् ॥

दातव्यं शतधाऽऽमन्त्र्य, वन्यमामरान्तिकम् ।
श्मशान-भस्म चादाय, सहस्रं मन्त्रितं प्रिये ! ॥
खाने पाने प्रदातव्यं, भोज्य-वस्तुनि वा प्रिये !
प्रातः-काले च जप्तव्यं, त्रि-सप्त-दिनमादरात् ॥
जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, वाचस्पति-समोऽपि वा ।
विप्र-चाण्डालयोः शल्यं, रवौ मध्यन्दिने प्रिये ! ॥
गृहीत्वा पञ्च-वर्णान् तु, कन्यका-सूत्र-वेष्टनात् ।
निखनेच्छत्रु - गेहे तु, सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥
पक्ष-मात्रेण देवेशि ! पशु - पक्षि - मृगादयः ।
तत्तद्-वैरि-भयं शल्यं, रवौ संग्रह्य बुद्धिमान् ॥
कोलं कृत्वा शत्रु-गेहे, निखन्योच्चाटनं भवेत् ।
विप्र-चाण्डालयोः शल्यमर्के, चार्कस्य मूलकम् ॥
चतुर्विधेन सम्वेष्ट्य, नील-सूत्रेण मन्त्रयेत् ।
निखनेच्छत्रु-गेहे तु, शयनागार - मध्यतः ॥
पक्षान् मारणमाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा ॥
केरलं मन्त्रममलमाञ्जनाख्यं सु- पावनम् ।
सर्व-प्रयोग-कृन् मन्त्रं, सर्व-सिद्धि-करं नृणाम् ॥

॥ मन्त्र ॥

"ॐ नमो भगवते हनुमते, जगत्प्राण-नन्दनाय, ज्वलित-पिङ्गल-लोचनाय, सर्वाकर्षण-कारणाय ! आकर्षय आकर्षय, आनय आनय, अमुकं दर्शय दर्शय, राम-दूताय आनय आनय, राम आज्ञापयति स्वाहा ।"

विधि—उक्त 'केरल'-मन्त्र का जप रविवार की रात्रि से प्रारम्भ करे। प्रतिदिन दो हजार जप करे। बारह दिनों तक जप करने पर मन्त्र-सिद्धि होती है। उसके बाद पाँच बालकों की पूजा कर उन्हें भोजनादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। ऐसा कर चुकने पर साधक को रात्रि में श्री हनुमान जी स्वप्न में दर्शन देंगे और अभीष्ट कामना को पूर्ण करेंगे। इस मन्त्र से 'आकर्षण' भी होता है। यथा—

एतन्मन्त्रं कुलेशानि ! आञ्जनेयं समर्चयेत् ।
धूपोपहार-विधिना, रात्रौ भानु-दिनादितः ॥

द्वादशाहे भवेत् सिद्धिः, द्वि-सहस्र-जपादिना।
तदन्ते वटुकानेव, भोजयेद् वाण-संख्यया ।।
आञ्जनेयस्तु गिरिजे ! रात्रौ स्वप्ने समागतः ।
मन्त्र-सिद्धिमवाप्नोति, देवता च प्रसीदति ।।
भानु-विम्बोपरि सम्यङ्, नदी-मध्ये तु साधकः ।
जपेत् सहस्र-संख्यकं, सिञ्चयन् वाम-पाणिना ।।
तन्मध्यस्था कुलेशानि ! नाना-मकर-कच्छपाः ।
समायान्ति च निश्शेषं, शिवस्य वचनं यथा ।।
वाम-पाद-रजो ग्राह्यं, स्व-प्रियस्य कुलेश्वरि !
तत् प्रातरम्बुना सम्यक्, प्राशयेन्मन्त्र-योगतः ।।
आदाय वाम - हस्तेन, प्रजपेदयुतं तदा ।
स्वयमागच्छते शीघ्रं, शिवस्य वचनं तथा ।।
कर्णाटकाख्यं महा-मन्त्रं, आञ्जनेयस्य पार्वति !
शावरं मन्त्रमनघे ! वक्ष्येऽहं तव सुव्रते ! ।।

।। मन्त्र ।।

"ॐ यं ह्रीं वायु-पुत्राय ! एहि एहि, आगच्छ आगच्छ, आवेशय आवेशय, रामचन्द्र आज्ञापयति स्वाहा ।"

विधि--'कर्णाटक' नामक उक्त मन्त्र को, पूर्ववत् पुरश्चरण कर, सिद्ध कर लेना चाहिए । फिर यथोक्त - विधि से 'आकर्षण' प्रयोग करे । यथा--

मन्त्रतस्तु खाने पाने, पूर्व-वत् पुरश्चर्यमामन्त्र-सिद्धिः ।
ताम्बूलेन कुलेशानि ! स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
पुष्पेणैव च राजानं, चन्दनैर्विप्रजं कुलम् ।।
शूद्राणां फल-योगेन, हृयाकर्षण-करं भवेत् ।
आकर्षणं च वैश्यानां, सितया च गुड़ेन च ।।
आन्ध्रं मन्त्रं प्रवक्ष्यामि, चाञ्जनेयं सु-पावनम् ।
सर्व-रोग-प्रयोगेषु, पाठात् सिद्धि-करं कलौ ।।

।। मन्त्र ।।

"ॐ नमो भगवते ! असहाय-सूर ! सूर्य-मण्डल-कवलीकृत ! काल-कालान्तक ! एहि एहि, आवेशय आवेशय, वीर-राघव आज्ञापयति स्वाहा ।"

विधि—उक्त 'आन्ध्रं' मन्त्र के पुरश्चरण की भी विधि वही है। सिद्ध-मन्त्र द्वारा सौ बार अभिमन्त्रित भस्म को शरीर में लगाने से सर्वत्र विजय मिलती है। यथा—

पूर्व-वत् पुरश्चर्य, पूर्व-वद् वटुक - भोजनम्।
पूर्व-वच्च प्रयोगं तु, कुर्यान् मान्त्रिक-कोविदः॥
शत-वारं मन्त्रितं तु, भस्मोद्धूलनमाचरेत्।
रणे राज-कुले चैव, स्वभाव-विजयो भवेत्॥
गुर्जरं शावरं मन्त्रं, आञ्जनेयं सु-पावनम्।
वद मे करुणा-सिन्धो! इत्यादि-नाथोदितं पुरा॥

॥ मन्त्र ॥

"ॐ नमो भगवते अञ्जन-पुत्राय, उज्जयिनी-निवासिने, गुरुतर-पराक्रमाय, श्रीराम-दूताय लङ्कापुरी-दहनाय, यक्ष-राक्षस-संहार-कारिणे हुं फट्।"

विधि—उक्त 'गुर्जर'-मन्त्र का दस हजार जप रात्रि में भगवती दुर्गा के मन्दिर में करना चाहिए। तदनन्तर केवल एक हजार जप से कार्य-सिद्धि होगी। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित तिल का लड्डू खाने से और भस्म द्वारा मार्जन करने से भविष्य - कथन करने की शक्ति मिलती है। तीन दिनों तक अभिमन्त्रित शर्करा को जल में पीने से श्री हनुमान जी स्वप्न में आकर सभी बातें बताते हैं, इसमें सन्देह नहीं। यथा—

एतन्मन्त्रं कुलेशानि! दुर्गालये बुद्धिमान्।
जपेत् तत्र निशा-काले ह्ययुतं नियमेन च॥
मन्त्र-सिद्धिमवाप्नोति, देवता च प्रसीदति।
तदारभ्य तु देवेशि! साध्य-कर्म-समन्वितम्॥
भवेत् सहस्रमेकैकं, दुर्गायाः पुरतो बुधः।
कार्य-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा॥
एतन्मन्त्रेण देवेशि! तिल-पिष्टस्तु बुद्धिमान्।
पलमेकं भक्षयित्वा, भस्म-मार्जनतः प्रिये!॥
गतागतश्च वदति, नात्र कार्या विचारणा।
वार-त्रयं मन्त्रितं च, शर्करोदक-पानतः॥

स्वप्ने चैवाञ्जनी-सूनुः, सर्वं वदति निश्चितम् ।
एतच्छावर-मन्त्रं च, ह्याञ्जनेयस्यमुत्तमम् ।।
सर्व-सिद्धि-प्रदं लोके, देवैरपि सु-दुर्लभम् ।।

।। इति शावर - चिन्तामणि - ग्रन्थोक्तं हनुमत् - सावर - मन्त्र-प्रयोगः समाप्तम् ।।

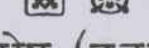

भूतादि-ग्रस्त या दृष्टि-दोष (नजर लगना) निवारक प्रयोग

(१)

ॐ नमः वीर, वज्र, हनुमन्त ! चल, वेग चल, लोहे की गदा, वज्र का सोटा, पान का बीड़ा, तेल-सिन्दूर की पूजा, हं हं हङ्कार, पवन-कुमार, काल ! चं चं चं चक्र-हस्त ! भैरव कील, चामुण्डा कील, मसान कील, देव कील, दैत्य कील, दानव कील, राक्षस कील, डाकिनी कील, शाकिनी कील, वारे जात बाघ कील, नव कोटि नाग कील, छल-छिद्र भेद कील, भौंधरा मौंधरा कील, बावन वीर कील, वारे जात घात कील, डां डं अचल-चला पृथ्वी कील, कल सिंह कील, अप-घात करे—उलट ताके ऊपर परे, खङ्क खङ्क खाय स्वाहा ।

विधि—शनिवार की रात्रि में हनुमान जी का पूजन कर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे और मोर-पङ्ख पर फूंक मार कर हनुमान के ऊपर झाड़ा दे । इसी प्रकार सात शनिवार करे, तो मन्त्र सिद्ध हो जायगा । पश्चात् जिस बालक पर भूत-प्रेतादि, दृष्टि-दोष (नजर लगना) हो, तो मोर-पंख से ११ बार झाड़ दे । बालक निश्चय ही स्वस्थ हो जायगा ।

ॐ नमो आदेश आदि-पुरुष कूं ! गोविन्द-नगर सूँ हनुमन्त वीर आया, गाजन्त आया, घोरन्त आया, किलकन्त आया, सवा मन की साँकल तोड़न्त आया, सार का चणा चबावन्त आया, लोह का दण्ड मारन्त आया, रूख-वृक्ष बाग-बावड़ी उखाड़न्त आया, कुआँ-तालाब फोड़न्त आया । चलो, चलो हनुमन्त वीर ! न चले, तो श्यामजी की आन । न चले, तो सुखदेव की आन । न चले, तो लछमन जी की आन । न चले, तो लछमनपुरी जी की आन । न चले, तो महादेव की आन । तीन पाव लपसी, इकईस पान का बीड़ा, बल तुम्हारो किया । कराये पे चले, देव-दानव पे चले, परी पे चले, वैरी दुश्मन पे चले,

भूत-प्रेत पे चले, भैंसासुर खब्बोस पे चले, सिहारी पे चले, चौंसठ जोगनी पे चले, डाकिनी साखिनी पे चले, बावन वीर पे चले, हमारा हकारा न चले, तो सीता सतवन्ती की आन ।

विधि--दीपावली की रात्रि में हनुमान जी के मन्दिर में, घी का दीपक जलाकर, हनुमान जी का पूजन करे । उत्तर की ओर मुख कर मन्त्र का १०८ वार जप करे । इसके बाद अभिचार प्रयोग, भूत-प्रेतादि-वाधा के नाश के लिए स्वच्छ पात्र में रक्खे हुए जल को अभि-मन्त्रित करे । कुछ अभिमन्त्रित जल को रोगी अथवा वाधा-ग्रस्त पर छिड़कें । शेष अभिमन्त्रित जल को पिला दें । इससे सर्व प्रकार की वाधाएँ, रोगादि शान्त हो जाते हैं ।

सर्व-रोग, सर्व-व्याधि निवारक प्रयोग

हनुमन्त मन्त्र--**ॐ नमो हनुमते, प्रकट-पराक्रमाय ! कृती दिग्-मण्डल-यशोऽमिता । धवलो-कृत जग-त्रीवो । आप वज्र-रुद्रावतार । लङ्कापुरी-दाहन, उदधि-लङ्घन । वायु-पुत्र, अञ्जनी-गर्भ-सम्भूतं । कुमार, ब्रह्म-चार्जं, गम्भीर शब्द सर्व-रोग-प्रहरणम्, सर्व-व्याधि-विनाशनम् । भूत-प्रेत-पिशाच, यक्ष-गन्धर्व डाकिनी-साकिनी, मरीम, सान, भैरवी-काली-महा-काली-रेवती-वृद्धि-रेवती । एकाहिकं, द्वाहिकं त्राहिकं, पञ्चाहिकं, षष्ठाहिकं, साप्ताहिकं, अष्टाहिकं वपु जैतिक, कोलिकादि-दोष, मारण मोहन-उच्चाटन-वशीकरण-आकर्षण स्तम्भन-विभावनानि प्रबल सर्व पापानि हन-हन, मथ-मथ, पच-पच, हठ-हठ, ऐहि ऐहि, वात-ज्वर, प्रेत-ज्वर, श्लेष्म-ज्वर, मन्द ज्वर, द्वन्द्वज-ज्वर, ताप-ज्वर, महा-महेश्वर-ज्वर, नारसिंह-ज्वर, भूत-ज्वर, कौल-कोती-ज्वर, आगन्तुक-ज्वर, ब्रह्म-ज्वर, नील-ज्वर, सव-ज्वर छिन्धि छिन्धि, भिन्धि-भिन्धि, मारय-मारय-मारय, नाशय-नाशय, प्रहारय-प्रहारय, आरोग्यं कुरु-कुरु, हन-हन, फट् स्वाहा ।**

शाबर भैरव-मन्त्र

'भैरव-सर्वस्व', पीताम्बरा-पीठ, दतिया से उद्धृत

[१]

सर्व-कार्य-सिद्धि-प्रद

श्री काल-भैरव बटुक-भैरव प्रयोग

ॐ अस्य श्री वटुक-भैरव-स्तोत्रस्य सप्त-ऋषिः ऋषयः, मातृका छन्दः, श्रीबटुक-भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता-सर्व-सिद्धिर्भवेत् । शोक-दुःख-क्षय-करं निरञ्जनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णं त्वं महेशं । सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् । काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल-हन्ता रूपं च, भैरव गुनी । महात्मनः योगिनां महा-देव-स्वरूपं । सर्वं सिद्धयेत् । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ त्वं ज्ञानं, त्वं ध्यानं, त्वं योगं, त्वं तत्त्वं, त्वं वीजं, महात्मानं त्वं शक्तिः, शक्ति-धारणं त्वं महा-देव-स्वरूपं । सर्व-सिद्धिर्भवेत् । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं नागेश्वरं, नाग-हारं च त्वं, वन्दे परमेश्वरं । ब्रह्म-ज्ञानं ब्रह्म-ध्यानं, ब्रह्म-योगं, ब्रह्म-तत्वं, ब्रह्म-बीजं महात्मनः । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

त्रिशूल-चक्र-गदा-पाणिं शूल-पाणि पिनाक-धृक् ! ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं विना गन्धं, विना धूपं, विना दीपं सर्व-शत्रु-विनाशनं । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवे नमः । सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धि कुरु । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं महा-ज्ञानी, महा-ध्यानी, महा-योगी, महा-बली, तपेश्वर ! देहि मे सिद्धि सर्वं । त्वं भैरवं भीम-नादं च नादनम् । ॐ काल-भैरौ, वटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं । अमुकं मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु । सर्वार्थकस्य सिद्धि-रूपं त्वं महा-काल ! काल-भक्षणं महा-देव-स्वरूपं त्वं । सर्वं सिद्धयेत् ! ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् !

ॐ काल-भैरव ! त्वं गोविन्द, गोकुलानन्द ! गोपालं, गोवर्द्धनं धारणं त्वं । वन्दे परमेश्वरं । नारायणं नमस्कृत्य, त्वं धाम-शिव-रूपं च । साधकं सर्वं सिद्धयेत् । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं राम-लक्ष्मणं, त्वं श्रीपति-सुन्दरं, त्वं गरुड़-वाहनं, त्वं शत्रु-हन्ता च, त्वं यमस्य रूपम् । सर्व-कार्य-सिद्धि कुरु । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरं, त्वं जगत्-कारणं, सृष्टि-स्थिति-संहार-कारकं, रक्त-बीजं, महा-सैन्यं, महा-विद्या, महा-भय-विनाशनम् । ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं आहार मद्य, मांसं च, सर्व-दुष्ट-विनाशनं, साधकं सर्व-सिद्धि-प्रदा ।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर-अघोर, महा-अघोर, सर्व-अघोर, भैरव-काल ! ॐ काल भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं। ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, रं रं रं, क्रूं क्रूं क्रूं। मोहन! सर्व-सिद्धि कुरु-कुरु। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकं उच्चाटय-उच्चाटय, मारय-मारय। प्रूं प्रूं, प्रें प्रें, खं खं। दुष्टान् हन-हन। अमुकं फट् स्वाहा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ बटुक-बटुक योगं च बटुकनाथ महेश्वरः। बटुकं वट-वृक्षे बटुकं प्रत्यक्ष सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरौ, वटुक-भैरौ भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव, श्मशान-भैरव, काल-रूप काल-भैरव! मेरो वैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वाली-मुखी! तूं दुष्टन बध करो। बिना अपराध जो मोहिं सतावे, तेकर करेजा छिदि परै, मुख-वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूर्य जाने की आदि-पुरुष जाने। काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रि-वाचा सत्य, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा! ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव! त्वं डाकिनी, शाकिनी, भूत पिशाचश्च। सर्व-दुष्ट-निवारणं कुरु कुरु, साधकानां रक्ष रक्ष। देहिं मे हृदये सर्व-सिद्धिम्। त्वं भैरव-भैरवीभ्यो, त्वं महा-भय-विनाशनं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। पच्छिम दिशा में सोने का मठ, सोने का किवाड़, सोने का ताला, सोने की कुञ्जी, सोने का घण्टा, सोने की साँकुली। पहली साँकुली अठारह कुल-नाग के बाँधों। दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति के बाँधों। तीसरी साँकुली वैरि-दुष्टन के बाँधों। चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी के बाँधों। पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत के बाँधों। जरती अगिन बाँधों, जरता मसान बाँधों, जल बाँधों, थल

बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहि का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाय, सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, वटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव, महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। उत्तर दिशा में रूपे का मठ, रूपे का किवार, रूपे का ताला, रूपे की कुञ्जी, रूपे का घण्टा, रूपे की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूँ, तोसरी साँकुली बैरी दुश्मन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहि का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव, महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। पूरब दिशा में तामे का मठ, तामे का किवार, तामे का ताला, तामे की कुञ्जी, तामे का घण्टा, तामे की साँकुली। पहली साँकुली अठारह कुल-नाग को बाँधूँ, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूं, तीसरी साँकुली वैरी-दुष्टन को बाँधूं, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधूँ, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधूं। जलत अगिन बाँधूँ, जलत मसान बाँधूँ, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहि बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाए सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। दक्षिण दिशा में अस्थि का मठ, अस्थि का किवार, अस्थि का ताला, अस्थि की कुञ्जी, अस्थि का घण्टा, अस्थि की साँकुली। पहली साँकुली अठारह कुल नाग को बाँधों, दूसरी साँकुली

अठारह कुल-जाति को बाँधों, तीसरी साँकुली वैरी-दुष्टन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहि का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव! त्वं आकाशं, त्वं पातालं, त्वं मृत्यु-लोकं। चतुर्भुजं, चतुर्मुखं, चतुर्बाहुं, शत्रु-हन्ता च त्वं भैरव! भक्ति-पूर्णं कलेवरम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव! तुम जहाँ जाहु, जहाँ दुश्मन बैठ होय, तो बैठे को मारो। चलत होय, तो चलते को मारो। सोवत होय, तो सोते को मारो। पूजा करत होय, तो पूजा में मारो। जहाँ होय, तहाँ मारो। ब्याघ्र लै भैरव, दुष्ट को भक्षौ। सर्प लै भैरव! दुष्ट को डँसो। खड्ग से मारो, भैरव! दुष्ट को। शिर गिरैवान से मारो, दुष्टन करेजा फटै। त्रिशूल से मारो, शत्रु छिदि परै, मुख वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूरज जाने की आदि-पुरुष जाने। काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा सत्य फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव त्वं। वाचा चूकै, उमा सूखै, दुश्मन मरै अपने घर में। दुहाई काल-भैरव की। जो मार वचन झूठा होय, तो ब्रह्मा के कपाल टूटै शिवजी के तीनों नेत्र फूटैं। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव! त्वं भूतस्य भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः। त्वं भैरव, सर्व-सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव ! त्वं ज्ञानी, त्वं ध्यानी, त्वं योगी, त्वं जङ्गम स्थावरं त्वं सेवित सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् । ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

ॐ काल-भैरव ! त्वं वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्म-रूपं, प्रसन्नो भव । गुनि, महात्मानां महा-देव-स्वरूपं सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

[२]

भूत, प्रेत, पिशाच, शत्रु-भय-निवारणार्थ प्रयोग

ॐ ह्रीं बटुक-भैरव । बालक केश । भगवान् वेश । सब आपद को काल । भक्त-जन हठ को पाल । कर-धरे शिर-कपाल । दूजे करवाल । त्रि-शक्ति देवी को बाल । भक्त-जन-मानस को भाल । तैंतीस कोटि मन्त्र को जाल । प्रत्यक्ष बटुक-भैरव जानिए । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र—ईश्वरो वाचा ।

विधि—उक्त मन्त्र की सिद्धि के लिए ग्रहण-काल, गङ्गा-दशहरा या होली की रात में उड़द के बड़ों का नैवेद्य लगाए । गुग्गुल की धूप देकर उक्त मन्त्र का एक हजार जप करें । मन्त्र सिद्ध हो जाने पर भूत, प्रेत, पिशाच, शत्रु-भय आदि बाधा नष्ट करने के लिए या अन्य किसी कामना की पूर्ति के लिए भगवान् बटुक-भैरव का ध्यान कर उक्त प्रकार सिद्ध हुए मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए ।

[३]

कामना-सिद्धि-प्रयोग

ॐ काली, कङ्काली महा-काली के पुत्र कङ्काल-भैरूं ! हुकुम हाजिर रहे ! मेरा भेजा काल करे, मेरा भेजा रक्षा करे । आन बाँधूं, वान बाँधूं, चलते-फिरते औसान बाँधूं, दसो सुर बाँधूं, नौ नाड़ो—बहत्तर कोठा बाँधूं ।

फल में भेजूं, फूल में जाय । कोठे जो पड़े, थर-थर काँपे, हल-हल हले, गिर-गिर पड़े । उठ-उठ भागे, बक-बक बके ।

मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा बरस कूं बावला न करे, तो माता काली की शय्या पर पग धरे । वाचा चूके, तो उमा सूखे । वाचा छोड़, कुवाचा करे, तो धोबी की नाँद—चमार के कुण्ड में पड़े ।

मेरा भेजा बावला न करे, तो रुद्र के नेत्र की ज्वाला कढ़े, शिर की लटा टूटि भूमि में गिरे, माता पारवती के चीर पर चोट पड़े। बिना हुकुम नहीं मारना हो, तो काली के पुत्र कङ्काल-भैरूँ। फुरो मन्त्र—ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरू का।

विधि—दीपावली (काल-रात्रि) अथवा ग्रहण-रात्रि में चौमुखा दीपक जलाए। त्रि-खूँटा चौका लगाकर दक्षिणाभिमुख बैठे। कनेर के फूल, लड्डू, सिन्दूर, लौंग-जोड़ा और पुष्प-माला सामने रखे। उक्त मन्त्र का एक हजार जप कर, दशांश हवन करे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर इच्छित कार्य हेतु भगवान् भैरव से प्रार्थना करे, तो वह अवश्य पूर्ण होगी।

[४]

रक्षा प्रयोग

काला भैरौ, कपिल जट्टा-भैरौ खेले। चार चमट्टा भैरौ मारे। भैरौ खाय, भैरौ मार मसाने जाय। दोहाई नोना चमाइन के। दोहाई शहर जमाल के। दोहाई काल-भरव के। मेरे पिण्ड-प्राण के खबरदार रहना। स्वाहा।

विधि—सिद्धि हेतु उक्त मन्त्र का एक हजार जप कर, लोबान और गुग्गुल से दशांश (१००) हवन करे।

प्रयोग यदि किसी दूसरे के लिए है, तो 'मेरे' के स्थान पर उसका नाम कहे।

[५]

वशीकरण मन्त्र

(१)ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रि-लोक-नाथाय! ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि—सर्व-प्रथम किसी रवि-वार को गुग्गुल, धूप, दीपक सहित उपर्युक्त मन्त्र का पन्द्रह हजार जप कर उसे सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप कर एक लौंग को अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित लौंग को, जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलाए।

(२) **ॐ नमो काला गोरा भैरूं वीर ! पर-नारी सूं देहो सीर । गुड़, परिदीयो गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैरूं आणी । गुड़, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश । जीवत सवै देवरो, मूआ सेवै मसाण । पकड़ पलना ल्यावे । काला भैरूं न लावै, तो अक्षर देवी कालिका की आण । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।**

विधि—इक्कीस हजार जप । आवश्यकता पड़ने पर इक्कीस बार गुड़ को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाए ।

(३) **ॐ भ्रां भ्रां भूं भैरवाय स्वाहा ।**

ॐ भं भं भं अमुक-मोहनाय स्वाहा ।

विधि—उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर पीपल के पत्ते को अभिमन्त्रित करे । फिर मन्त्र को उस पत्ते पर लिखकर, जिसका वशीकरण करना हो, उसके घर में फेंक देवे । या उसके घर के पिछवाड़े गाड़ दे । यही क्रिया 'छितवन' या 'फुरहठ' के पत्ते द्वारा भी हो सकती है ।

[६]

स्वप्न में कामना-ज्ञान का मन्त्र

(१) **ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षेत्र-पालाय नमः ।**

विधि—रात्रि में शयन-समय अपने सिरहाने नौ प्यालों में जल भरकर रक्खे और गुग्गुल का धुआँ करे । लेटे-लेटे उपर्युक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करे । इस प्रकार तीन रात्रि करे । जिस बात को जानना हो, उसका स्मरण करते हुए सोए । स्वप्न में भगवान् भैरव द्वारा सम्पूर्ण कामनाओं का ज्ञान हो जाता है ।

(२) **ॐ नमो मणि-भद्राय, चेटकाय, सर्व-कार्य-सिद्धिं कुरु-कुरु, मम स्वप्न-दर्शनं कुरु-कुरु स्वाहा ।**

विधि—दस हजार जप । फिर आवश्यकता पड़ने पर १०० बार मन्त्र का जप कर लाल कनेर के पुष्प को अभिमन्त्रित करे और अपने सिरहाने रखकर सोए । तीन, पाँच या सात दिनों में स्वप्न में ऐच्छिक उत्तर की प्राप्ति होती है ।

[७]

सर्व-कामना-पूर्ति का मन्त्र

(१) **ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षेत्रपालाय, सर्व-दोषान् चूरय-चूरय । सर्व-देवान् साधय-साधय । राजा मोही, प्रजा मोही, ग्राम-जन मोही । बाप क्षेत्रपाल, थारो आण फिरे । ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।**

विधि—ग्यारह हजार जप । इकतालीस दिन तक जप करे । प्रति-दिन कुत्ते को 'बलि' निकाले । फिर आवश्यकतानुसार प्रार्थना कर जप करे । सभी कार्य सिद्ध होते हैं । सभी प्रकार की आपदाएँ दूर हो जाती हैं ।

(२) **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षेत्रपालाय नमः । राजा-प्रजा-वासी कुरू कुं स्वाहा ।**

विधि—उपर्युक्त मन्त्र का जप पूर्ण पवित्रता के साथ पुष्य नक्षत्र में रविवार को प्रारम्भ करे । इक्कीस माला जप छः मास तक निश्चित समय पर नित्य धूप-दीप के साथ करे । रात्रि में भगवान् बटुक-भैरव को नित्य बलि प्रदान करे । भगवान् बटुक-भैरव का निश्चित रूप से दर्शन होता है और सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं ।

(३) **ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं गोरा क्षेत्रपाल ! आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।**

विधि—इक्यावन हजार जप । रविवार को पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करे । लाल चन्दन, गुग्गुल, लाल कनेर के फूल तथा गोरोचन का प्रति-दिन हवन करे । सर्व-कामनाएँ सिद्ध होती हैं ।

[८]

भूत-प्रेत-नाच बन्द करने का मन्त्र

ॐ त्रीं त्रीं त्रीं भैरवाय स्वाहा ।

विधि—जिस घर में नाच हो रहा हो, वहाँ उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर सात मुट्ठी धूल फेंक दे, तो नाच बन्द हो जाता है ।

शाबर मन्त्र-अष्टक

('मन्त्र-महार्णव' से उद्धृत)

(१) **'आधा सीसी'-निवारक प्रयोग**—'ॐ नमो वन में ब्याई वानरी, उछल वृक्ष पै जाए। कूद-कूद शाखान पै, कच्चे वन-फल खाए। आधा तोड़ै, आधा फोड़ै, आधा देय गिराए। हंकारत हनुमान जी, आधा सीसी जाए।

विधि - उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित विभूति द्वारा झाड़ने से 'आधा सीसी' की पीड़ा समाप्त हो जाती है।

(२) **'कामला'-पीलिया-निवारक-प्रयोग**—ॐ नमो वीर-बैताल असराल नारसिंह देव। खादी तुषादी पीलिया कूं भिदाती। काटै झारै पीलिया, रहै न नेक निशान। जो कहीं रहे जाए, तो हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र—ईश्वरो वाचा।

विधि—एक काँसे की कटोरी में सरसों का तेल भरे। कटोरी को रोगी के सिर पर रक्खे। कुश से कटोरी के तेल को मन्त्र पढ़ते हुए चलाता जाए। जब तेल पीला हो जाए, तब उतार ले। इस प्रकार तीन दिन झाड़ने से 'कामला' (पीलिया) रोग अच्छा हो जाता है।

(३) **नेत्र-कष्ट-निवारक प्रयोग**—ॐ नमो श्रीराम की धनुही, लक्ष्मण का बाण। आँख दर्द करै, तो लक्ष्मणकुमार की आन।

विधि—उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए नीम की टहनी द्वारा झाड़ने से तीन दिन में नेत्र की पीड़ा दूर हो जाती है।

(४) **'कण्ठ-माला'-निवारक प्रयोग**—ॐ नमो कण्ठ-बेल तूं द्रुम-द्रुमाली। सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ जागता आया। बढ़ती बेल को तुरत घटाया, जो कुछ बची, ताहि मुरझाया। घट गई बेल, बढ़न नहिं पावै, बैठी तहाँ उठन नहिं पावै। फूटै और पीड़ा करै, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई। सत्य नाम, आदेश गुरू का। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र २१ बार पढ़ता हुआ चाकू की नोक द्वारा एक सप्ताह तक झाड़े और धरती पर २१ लकीरें बनाए। इससे 'कण्ठ-माला' (कण्ठ-बेल) सूख जाती है।

(५) **'नाभि' उखड़ने की पीड़ा-निवारक प्रयोग**--ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी। नौ मै नाड़ी, वहत्तर सौ कोठा, चले अगाड़ी। डिगै न कोठा, चलै न नाड़ी, रक्षा करै, जती हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र--ईश्वरो वाचा।

विधि—एक सूत में नौ गाँठ बनाए। सूत को छल्ले की तरह बना ले। फिर उसे रोगी की नाभि पर रखकर उपर्युक्त मन्त्र पढ़े और उस पर फूँक मारे। थोड़ी ही देर में 'नाभि' अपने ठिकाने आ जाएगी।

(६) **दाँत की पीड़ा, कीड़ा-निवारक प्रयोग**--ॐ नमो कीड़ रे ! तूं कुण्ड-कुण्डाला। लाल पूंछा, तेरा मुख काला। मैं तोहि पूछूं–कहाँ ते आया ? तोड़ मांस सबको क्यौं खाया ? अब तूं जाए, भस्म हो जाए। गोरखनाथ के लागूँ पाँय। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि—दीपावली की रात में एक लाख जप करने से उपर्युक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर मन्त्र-उच्चारण सहित नीम की डाली द्वारा झाड़ने से दाँत की पीड़ा दूर हो जाती है। कीड़े मर जाते हैं।

(७) **'अर्श (बवासीर)-निवारक प्रयोग**—ॐ डमती-डमती चल-चल स्वाहा।

विधि--उक्त मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर एक लाल डोरे में तीन गाँठें लगाए। फिर गाँठ लगे डोरे को दाहिने पैर के अँगूठे में बाँधे, तो खूनी 'अर्श' (बवासीर) की पीड़ा दूर हो जाती है।

(८) **'कखलाई'-निवारक प्रयोग**--ॐ नमो कखलाई मरी तलाई, जहाँ बैठा हनुमन्ता। आई पकै न फूटै, चलै न पीड़। रक्षा करै हनुमन्त वीर। दुहाई गुरु गोरखनाथ की। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरू का।

विधि--उक्त मन्त्र को पढ़कर नीम की टहनी द्वारा इक्कीस बार झाड़े। झाड़ने के बाद धरती की मिट्टी लगा दे। दो-तीन दिन में 'कखलाई' बैठ जाएगी।

सर्प-बिच्छू-विष-निवारक शाबर-मन्त्र

[१] सर्प-विष को निर्विष करने का प्रयोग

ॐ लहरि - लहरि तुरङ्ग ते मारो।
देखि भूत ब्रह्माण्ड खू मारो॥

दूर पाटन बसे कबीर, तहाँ से आई झिलिमिलि फूल, ऐसी माटी दूर धसि हीरा बेधो आय। ताहि माटि निज हँस पियारा, विष-धर के मन्त्र सवं जब लागे, खारबले मुख मोरि, दोहाई सत्य-नाम के, सर्प के विष माटी हो जाय, दोहाई उत्तरा कुँवर के। उतर जाय, उतर जाय, उतर जाय।

विधि—उक्त मन्त्र-सिद्धचर्थ उत्तरा नक्षत्र जब लगे, अर्थात् १५ दिनों के लिए जो वर्षायन नक्षत्र आता है, उसमें किसी भी एक दिन सवा पाव (पक्का तौल) गो-घृत द्वारा आम की सामधा में उक्त मन्त्र द्वारा १०८ आहुतियाँ दे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है।

सर्प - दश वाले व्यक्ति का वस्त्र—धोती, गमछा या कुर्ता, जो भी काटने के समय वह पहने हो, उस कपड़े को मन्त्र का उच्चारण करते हुए एठें और फिर उस वस्त्र को भूमि पर रख दे। तब सर्प द्वारा काटे गए व्यक्ति को उस कपड़ के पार बिठा या लिटा दे। खूब महीन मिट्टी लेकर उक्त मन्त्र द्वारा उस मिट्टी को अभिमान्त्रित कर एठे हुए कपड़े पर छिड़के और काटे हुए व्यक्ति को कपड़े को लाँघने को कहे। इस प्रकार २१ बार 'लोम-विलोम' अर्थात् बीच के एठे हुए कपड़े को दोनों ओर लाँघन से सर्प-विष दूर होकर मनुष्य सुखी हो जाता है।

यदि व्यक्ति मूर्च्छित हो गया हो, तो दो आदमी उसको पकड़ कर कपड़े को लँघा दे। ३-४ बार ऐसा करने से वह मूर्च्छित व्यक्ति सचेत होकर अपने आप कपड़े को लाँघने लगेगा और पूर्ण निर्विष होकर जीवन-लाभ कर लेगा।

[२] सर्प की डाढ़ बन्द करने का प्रयोग

ॐ नमो सर्पा रे। तूं थूलं मथूला। मुख तेरा बना कमल का फूला। सर्पा रे सर्पा! बांधूं तेरी दाढी भुवा, जिनने तोकूं गोद

खिलाया। सर्पा रे सर्पा ! बधूँ तेरा रतन कटोरा, जामे तोकूं दूध पिलाया। सर्पा रे सर्पा ! बीज कीलनी बीज-पान मेरा कीला करै। जो धाव, तेरी डाढ़ भस्म हो जाए। गुरु गोरख भी जाय, जलाय। ॐ नमो आदेश गुरू का। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि--उक्त मन्त्र को शिव-रात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष पर्यन्त, प्रति-दिन सवा पहर तक असंख्य वार जपे, तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस सिद्ध मन्त्र से अभिमन्त्रित उपले की भस्म को सर्प पर डालने से, सर्प की डाढ़ बन्द हो जाएगी और साधक उस सर्प को खिलौने की भाँति उठा सकता है।

[३] सर्प-कीलन का प्रयोग

बजरी-बजरी बजर-किवाड़। बजरी कीलूँ आस-पास। मरै साँप, होय खाख। मेरा कील्या पथर कीलै - पत्थर फूटै, न मेरा कीला छूटै। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कङ्कड़ द्वारा साँप को मारने से वह कीलित हो जाएगा।

[४] कीलित सर्प का उत्कीलन

कीलन भई कुकीलनी, वाचा भया कुवाच। जाहु सर्प घर आपने, चुग फिर चारों मास।

पहेर भगवे कपड़े, कर मरदाना भेस। बन्धी बन्धीपन छुट गई, फिरि आचारों देस। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र--ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कङ्कड़ द्वारा कीलित साँप को मारने से उसका उत्कीलन हो जाएगा।

[५] विच्छू-दंश-निवारक प्रयोग

ॐ नमो आदेश गुरू का। काली बिच्छू कांकरवाली। उत्तर बिच्छू, नकर टालो। उतरै तो उतारूँ, चढ़ै तो मारूँ। गरुड़-मोर-पङ्ख दकालू। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि--उक्त मन्त्र को पढ़कर, बिच्छू द्वारा डसे हुए अङ्ग पर पेन्सिल से ऊपर से नीचे लकीर खींचते हुए झाड़े।

शाबर 'मोहन' (वशीकरण) मन्त्र

['मन्त्र-महार्णव' से उद्धृत]

(१) **ॐ नमो, हयलूण, सुहावय लूण, अईसा लूण, मसाणां हमां पाया। अमुकादिद अमुख खाय—तरुवा चाटत जनम जाए।**

विधि--उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित नमक को खिलाने से वशीकरण होता है।

(२) **पीर ! मैं नाथ-पीर, तूं नाथ ! जिस्को खिलाऊँ, तिसको वश करना। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।**

विधि—ग्रहण-काल में नाभि-पर्यन्त जलाशय में खड़े होकर, एक सुपारी को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे और फिर निगल जाए। जब वह सुपारी मल के साथ निकले, तब उसे जल से धोकर दूध से धोए और १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़ कर उसे गुग्गुल की धूनी दे। तदुपरान्त उस सुपारी का एक टुकड़ा साध्य को खिलाए।

(३) **ॐ नमो। काला कलुवा, काली रात, तिसकी पुतली माँझी रात, काला कलुवा, घाट-वाट सोती को जगाए ल्याके, बैठी को उठाय ल्याव, खड़ी को चलाय ल्याव, वेगी धर ल्याव। मोहिनी, जोगिनी ! चल, राजा को ठाँव। अमुकी के तन में चटपटी लगाव। जियाले तोड़, जो कोई खाय हमारी इलायची, कभी न छोड़ै हमारा साथ। घर को तजै, बहेर को तजै, घर के साँई को तजै। हमें तज और कने जाए, तो छातो फाड़ तुरत मर जाए। सत्य गुरू आदेश। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा। ईश्वर महा-देव की वाचा से टरै, तो कुम्भी नरक में पड़ै।**

विधि--शुभ तिथि-काल मे इक्कीस दिन लगातार जप कर उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर उसके द्वारा अभिमन्त्रित इलायची साध्य को खिलाए।

(४) **हथेली में हनुमन्त बसै, भैरूं बसै कपाल। नारसिंह की मोहिनी, मोहा सब संसार। मोहन रे मोहन्ता वीर, सब वीरन में तेरा सीर। सबकी दृष्टि बाँधि दे। तोहि तेल, सिन्दूर चढ़ाऊँ। तोहि तेल, सिन्दूर कहाँ से आया ? कैलास-पर्वत से आया। कौन ल्याया ? अञ्जनी का**

हनुमन्त, गौरी का गणेश ल्याआ । काला-गोरा-तोतल--तीनूँ बसैं कपाल । विन्दा तेल सिन्दूर का—दुश्मन गया पताल । दुहाई कामियाँ सिन्दूर की, हमें देख सीतल हो जाए । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र—ईश्वरो वाचा । सत्य नाम आदेश गुरू का ।

विधि—रविवार को भगवान् नृसिंह का षोडशोपचार-पूजन करके एक सौ इक्कीस वार उक्त मन्त्र पढ़े । इस प्रकार सात रविवारों में करे । मन्त्र-जप के समय तेल का दीपक जलाए, लोवान की धूप दे और नैवेद्य-स्वरूप लड्डू चढ़ाए । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । सिद्ध मन्त्र से सिन्दूर को अभिमन्त्रित कर, मस्तक में विन्दी के रूप में लगाए । इससे उच्च-से-उच्च इच्छित व्यक्ति का क्रोध शान्त हो जाता है और वह अनुकूल हो जाता है ।

(५) **ॐ नमो । कोटि वज्र पर शिला, तापर बैठे शोषा वीर । ताके साथ नव-नाथ बैठे । चौरासी सिद्ध बैठे । ठः ठः ठः । ह्रीं ह्रीं । आगच्छ मत्-समीपे त्वरमानय । त्रैलोक्य—पर्यन्तान् भूतानामकान् शीघ्रमानय । हूँ फट् ॐ पः पः ।**

विधि—किसी शुभ दिन में सायंकाल तीर्थ-स्थान में, पश्चिम-मुख बैठ कर १०८ वार काले ऊन से गुँथी माला में उक्त मन्त्र का जप करे । फिर रात्रि में १०८ बार जप करे । जप के आदि और अन्त में 'तीर्थ' की वलि अर्पित करे । दशांश होम करे, तो मन्त्र सिद्ध होगा ।

मन्त्र सिद्ध करने के बाद जिस कामना की पूर्ति करनी हो, उसका सङ्कल्प कर उक्त विधि के अनुसार उक्त सिद्ध मन्त्र का सात दिनों तक जप करे, तो उच्च-से-उच्च अधिकारी वशाभूत होकर मनोनुकूल कार्य करेगा । चौदह दिनों तक उक्त विधि से जप करने से सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं ।

हवन-सामग्री—(१) विभीतक, (२) धतूरे के फल, (३) चिच्चिणी या सिहोर के पत्ते (४) कपित्थ अर्थात् कैथे का गूदा—इनमें से किसी एक वस्तु में घी मिलाकर उसकी आहुतियों द्वारा हवन करना चाहिए ।

जप-संख्या प्रतिदिन १००० या १०,००० तक करके उसकी दशांश आहुतियाँ देने से अधिकाधिक फल की प्राप्ति होती है ।

आशु फल-प्रद सिद्ध शाबर

महा-लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्रीधन-प्रद-महा-लक्ष्मी-सिद्ध-शाबर-मन्त्रस्य श्रीविष्णु ऋषिः। श्रीमहा-लक्ष्मी देवता। श्रीं वीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। मम सकल-कामना-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

यह कह कर जल छोड़े।

ऋष्यादि-न्यास

शिरसि श्री विष्णुर्ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवतायै नमः। गुह्ये श्रीं वीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे क्लीं कीलकाय नमः। अञ्जलौ सकल-कामना-सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः।

कर-न्यास

श्रीं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यास

श्रीं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा। श्रीं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं कवचाय हुँ। श्रीं ह्रीं क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट्।

ध्यान

ॐ या सा पद्मासनस्था विपुल-कटि-तटिपद्म-पत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्त्त-नाभिः स्तन-भर-नमिता शुभ्र-वस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणि-गण-खचितै स्नापिता हेम-कुम्भैः,
नित्यं सा पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सर्व-माङ्गल्य-युक्ता॥

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन-पालिनि ! लक्ष्मि ! मम दारिद्र्यं नाशय नाशय, प्रचुरं धनं मे देहि देहि, क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ।

एक सहस्र जप नित्य दस दिन तक करे । तद्दशांश हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण-भोजन ।

हवन-सामग्री

(१) खस, (२) इन्द्र-यव, (३) सफेद चन्दन, (४) अगर, (५) तगर, (६) जटामांसी, (७) छड़ीला, (८) पञ्च-मेवा, (९) शकर, (१०) गो-घृत ।

सरस्वती शाबर मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्-वादिनि, भगवति ! अर्हन्-मुख-निवासिनी-सरस्वति ! ममांशे प्रकाशं कुरु-कुरु स्वाहा, ऐं नमः ।

विधि—दीपावली की रात्रि में पवित्र होकर श्वेत-वस्त्र, श्वेत-माला धारण करे और आसन पर उत्तराभिमुख बैठकर भगवती सरस्वती की मूर्ति या चित्र को अपने सामने किसी आधार पर स्थापित करे । धूप-दीपादि पञ्चोपचारों से भगवती की पूजा करे । फिर उक्त मन्त्र का बारह हजार जप करे । इससे भगवती प्रसन्न होती हैं और वाक्-सिद्धि की प्राप्ति होती है ।

श्रीवगला
सिद्ध शाबर मन्त्र
[१]

श्री वगलामुखी के निम्न मन्त्र का अयुत (दस सहस्र) जप करने सिद्धि मिलती है । हल्दी, हड़ताल, मालकांगनी (ज्योतिष्मती) को कूट कर कटु-तैलाक्त निम्ब काष्ठ या बदरी काष्ठ किंवा खदिर काष्ठ की समिधा द्वारा नित्य अष्टोत्तर-शत हवन करे । अर्थात् दस माला मन्त्र-जप और एक माला से हवन किया करे । दस दिनों में अभीष्ट सिद्धि अवश्य होगी ।

मन्त्र

ॐ ह्लीं वगला-मुखि ! जगद् - वशङ्करि ! मां वगले पीताम्बरे प्रसीद प्रसीद, मम सर्व-मनोरथान् पूरय पूरय ह्लीं ॐ ।

हवन करते समय उक्त मन्त्र के अन्त में **'स्वाहा'** शब्द जोड़कर अग्नि में आहुति छोड़े । पूर्णाहुति देकर निम्न स्तुति का पाठ करे—

स्तुति

नमो देवि वगले ! चिदानन्द-रूपे !
नमस्ते जगद्-वश-करे सौम्य-रूपे !
नमस्ते रिपु - ध्वंस - कारी- त्रिमूर्ते !
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।१।।
सदा पीत-वस्त्राढ्य-पीत- स्वरूपे !
रिपु - मारणार्थे गदा - युक्त - रूपे !
सदेषत् स-हासे सदाऽऽनन्द-मूर्ते !
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।२।।
त्वमेवासि मातेश्वरी त्वं सखे त्वं ।
त्वमेवासि सर्वेश्वरी तारिणी त्वं ।
त्वमेवासि शक्तिर्बलं साधकानाम् ।
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।३।।
रणे तस्करे घोर - दावाग्नि-युष्टे ।
विपत्-सागरे दुष्ट-रोगाग्नि-प्लुष्टे ।।
त्वमेका मतिर्यस्य भक्तेषु चित्ताः ।
स षट्-कर्मणानां भवेत्याशु दक्षः ।।४।।

[२]

बगला-शाबर मन्त्रः

(श्रीबगलामुखी रहस्यम् से संग्रहीत)

ॐ मलयाचल बगला भगवती महा-क्रूरी, महा-कराली, राज-मुख-बन्धनं, ग्राम-मुख-बन्धनं, ग्राम-पुरुष-बन्धनं, काल-मुख-बन्धनं, चौर-मुख-बन्धनं, व्याघ्र-मुख-बन्धनं, सर्व-दुष्ट-बन्धनं, सर्व-जन-बन्धनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा ।

अन्नपूर्णा शाबर मन्त्र

अन्नपूर्णा अन्न पूरै, इन्द्र पूरै पानी । ऋद्धि-सिद्धि तो गणेश पूरवै त्रिपुरा भवानी । ईश्वरी भण्डार भरै, महेश्वरी शील - सन्तोष की डिब्बी । तीन लोक लोई लाओ । सिद्धो ! जीमो सब कोई । सीता माता की रसोई, जन्म न खाली होई । चला मन्त्र—महा-यन्त्र, ॐ सुमरै फटकन्त स्वाहा । ॐ अजोयाजोता आए स्वाहा । ॐ श्रीसरस्वत्यै स्वाहा ।

विधि—मङ्गलवार के सात दिनों में, सात जगह की भिक्षा, एक-एक परिवार से ले । प्रत्येक भिक्षा को, उल्टी चक्की से पीसे और उससे भगवान् हनुमान की मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा करे । मूर्ति के सामने आसन पर बठकर उक्त मन्त्र का यथा शक्ति जप करे । सातवें मङ्गल को, सवा दस अंगुल की आटे की मूर्ति बनाए और उसे अपने भण्डार में स्थापित करे । इस प्रयोग से भण्डार अक्षय होता है अर्थात् वह कभी रिक्त नहीं होता ।

स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती की कृपा से प्राप्त

सिद्ध शाबर मन्त्र

संग्रह-कर्त्ता
पं० कृष्णानन्द दुबे, 'वैद्य'
जमुनीपुर कोटवाँ, प्रयाग

[यहाँ संगृहीत 'शाबर'-मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि सामान्य है, जिसे इस अङ्क के प्राक्कथन से पाठक जान सकते हैं। जिस मन्त्र के सम्बन्ध में कोई विशेष 'क्रिया या वस्तु' आवश्यक है, उसे उस मन्त्र के नीचे सूचित कर दिया गया है।—सं०]

१. **जहर-वात**—"अजमेर पहार। अजमेरू, कहाँ गए ? पीरि-परवर - पहार कहाँ गए ? कहाँ गया चन्दन का पेड़ ? काटे चन्दनवा का, होएह सवा लक्षि मन कोइला। होमेह कोइलवा का ? होइह पत्र षाड गछि जाइत। षाडवा का होइहि छूरी। गहि जाइति वरवटि। बाय-गोला भस्मी - भूत होइ जाए, ए दोहाई नारसिंह की। छू जहर-वात, आम-वात, बतास औ सुवना औ सन्निपात, काटि - कूटि समुद्र-पार बहावै।"

२. **आम-वात, बतास, सुवना, सन्निपात**—सात समुद्र सेत बाँधाई, तेहि चल लङ्का कीन्ह लड़ाई। तवन चोर धै आनिव धाई, दोहाई सीता सती की। दोहाई गौरा पारवती की। दोहाई राजा रामचन्द्र की। दोहाई हनुवन्त वीर को।

३. **दिनाई**—बिसतुइया का जुठैर, साँप कै जुठैर। एकरि कूरी चलावै। औ केहू कै दिहा-लिहा होइ, तवने कै कूरी चलावै। जाति-नाम कै कूरी चलावै। तवने यह कै होइ, तवने कै कूरी चलावै। कारन का दुस होइ, तवने कै कूरी चलावै। गोरू-बछरू कै कूरी चलावै।

४. **अध-कपारी (आधा सिर-दर्द)**—(१) सोनै कै कीरा, सोनै कै सरपत, जे कै मुरी बाँधौ, वा अध-कपारी। दोहाई गुरु नारायण की, दोहाई हनुमान जती की, दोहाई नारसिंह कै थनइल।

'आधा पत्ता' (आधीं अँजुली) की माटी (मिट्टी) से झारना चाहिए। इस मन्त्र से 'थनइल' (स्तन-सम्बन्धी रोग) भी अच्छे होते हैं।

(२) लोहार बिटिया, लोहार बिटिया। लोहार कहाँ गा? लोहार केदली के वन, ममाइला काटै। कोइला लगाई, फरूसा गढ़े, फरूसा में अध-कपारी। काटि-कूटि समुद्र मह बहाई। दोहाई ईश्वर, महादेव, गौरा, पारवती की।

'अध पखा' की माटी से झारे।

५. **दाँत का दर्द**—(१) हम हैं अगसर, तुह बत्तीस। हमसे तोहसे कवन हए खीस, हम बिहसै तुह बैठे खात। मरत बेरी अब सङ्गेह जाह।

(२) तदरे दतर वहतरि, शयन जानो, मन न जाने वाय। दोहाई कवरू के राजा की, छू।

६. **घाव की पीड़ा**—जल बाँधो, जलाहल बाँधो, मुनै-मुनै की धार। गोरखनाथ की लाख दोहाई। मोरे थाँभे घाव न पिराई। दोहाई गोरखनाथ की, छू।

७. **अर्श (बवासीर)**—कृष्ण मूसी, कृष्ण क्षीरा, लीला कण्ठ, हेमराज। जे एह मन्त्र कह जानै, तेकर कुल मह बवासीर न होइ। जौ होई, तो गौतम रिखि मारै कर दोष होइ। दोहाई महादेव की।

८. **भूत-बाधा**—(१) ॐ बाँधो भूत। जहाँ तू उपजा। छाड़ो गिरि पर्वत। चढ़ाई स्वर्ग दहेली। पृथ्वी जात्रं। झिलि - मिलाई, हङ्कार हनुवन्त को। पवार भीम। जारि करौ भसमं। तजे चापै शिव।

मन्त्र से लौंग फूंक चारों कोनों में गाड़े, तो भूत-बाधा दूर हो खटिया (चारपाई) के पावों की नीचे गाड़े, तो रोग अच्छा हो।

(२) ॐ काली कामरी, निसु अँधियारी राति। बाघ, वीग और चोर बावर, जेहु सारी रात। हङ्किनी, डाँकिनी, भूत - प्रेत न आवहिं मेरे पास। दोहाई नरसिंह की, कुरु कुरु स्वाहा।

(३) काली काली महा-काली, ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली, चापै पान, बजावै ताली। चाम की कोथरा, हाड़ की माला। तोर भार कवन चलावै ? हड़न्त के गड़न्त लाइके, श्री भवानी हुं स्वाहा।

(४) जञ्जालिया महा-जालिया, नुजालिया थी लौ कहाँ। भूत-प्रेत बाँधता नहीं। भूत बाँध, जोगिनी बाँधु, चरी बाँधु, चमारी बाँधु, नव-नाथ— चौरासी सिद्ध बाँधु, अष्ट - कुली नाग बाँधु, अठारह भार वनसपती बाँधु, तैंतीस कोटि देवता बाँधु, उनचास कोटि वसुन्धरा बाँधु, चौदह भुवन बाँधु, सात दीप नव खण्ड बाँधु, जेहिप हुङ्कारौ महा-जाल-सञ्जुत, सो तरि वरि होइ। भस्मन्त भूत राय पाताल मह, महा-वीर लोना चमाइनि सोखी वीर। जक्षी वीर, कजरिया वीर, सेंदुरिया वीर, भुजुरिया वीर, अएं गठास चौरङ्ग वीर। भैरो चलै, पूजा खाइ, मोहि लै आउ, वीर बाँधि। ल्याउ महादेव कर त्रिशूल, भीम कर गदा, अर्जुन कर वाण, छाँड़ु ग्रह लागु। पन्थ गोरख हाँकै, हनुमन्त तड़ापै, नारसिंह तड़ापै, जिमी हालै, अकास हालै। मोर चलावा चलु, मेरा बोलावा आउ, सोवत होइ, तो जगाव। लै आउ, बैठा होइ, तो उठाय लै आउ, न उठाइ लै आउ, तौ भैने की सेज्या परा। गुरु के रक्त से नहाइ। वाचा से कुवाचा करै, तो सात इस्त्री के अघोर नरक में पचि मरै। ब्रह्म वाचा, विष्णु वाचा, रुद्र वाचा— तीहू वाचा के दोष ऊपर परै, जो मेरा काज न करै। चलु महा-जाल, प्रचण्ड वीर !

भैरव और महा-वीर के मन्त्रों से १०८ आहुतियाँ देने से मन्त्र सिद्ध होता है।

(५) काल-भैरो, वटुक-भैरो, ब्रह्म - भैरो प्रगामिनि, नृसिंह - भैरो महा-प्रेतः, दूध-भैरो प्रजन्नतः, भूत-भैरो भद्र चञ्च, कोट - भैरो महा-धनम्, रुद्र-भैरो महा-प्रेतः, त्रिनेत्रे च जटा-धरम्, वैताल - भैरो महा-प्रेतः, रक्त-वाजम् महेश्वरः, सम्बोध - भैरो महाऽऽकारम्, त्रिशूल रन धारनम्, भूत-प्रेत-पिशाचादी सर्व-शङ्का-निवारनम् (इति भैरव-द्वादश-नामेषु कथ्यते)।

(६) ॐ काली महा-कालो, केली कल्यानां, काली स्वाहा।

भूमि पर त्रिकोण-यन्त्र लिखे। उस पर आम की लकड़ी रखकर अग्नि जलाए। उसमें राई, सर्णप सरसों, पिपरी, करू तैल, मछली और मांस द्वारा हवन करे। सवा लाख जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होता है।

९. प्रयोग-निवारण—(१) करै सो मरै। उलटि बेगि ताही लड़ी के सिर परै। दोहाई नारसिंह की।

(२) बन्धोरे बँधारवा न करै। कूक करै, जादू करै, टोना करै, मुस्यर न आवै, मुस पर न लगै। दोहाई ईश्वर महादेव कै, दोहाई हनुमान जती की। धौकरिआ, धौकरिआ, माया मोरी धौकरिआ, धौकरिआ। बाबा मोर धौकरिआ, धौकरिआ। अम्बी मोर, धौकरिया, धौकरिया। आक्षेपाथ रक्षाती, वज्र-लोहार की तीर, गोली, वेद कुङ्गी, अन कोढ़ा, स्रोंचा दात खातवज्र-घात, अम्मर का पान न फूटै। अमाँ के राखै कर, कांमरू केर कमक्षां, महां रीरीं प चण्डो, अज्ञां किमिर लागै। दोहाई कमक्षा देवी की।

१०. दृष्टि-दोष (नजर लगना) या टोना—(१) या आली या औलिया, औले हसन तुराव, हरमुस किले, सुवरे साहिबे, दल दुले, असवार दीन, वरत का।

सरहरी सरपत के सिरे पर निकलनेवाली शाखा से झाड़ना चाहिए।

(२) बजरङ्गो बजर केवार, जहवाँ रूँधा, बसो दुवार। बजर कहै, मैं रङ्गा चोंगा। एकौ बजर नहिं लागै। अङ्गा कवराह, कुन्था विद्या आई, सब टोनहिनि मिलि बान चलाई। सीर से दुरक जरै, कैरे खाय, सब परै टोनही के केसा। ईश्वर महादेव कै दोहाई। मोरे झारै, कष्ट रहै वौ। ईश्वर महादेव की दोहाई।

कुशा से १० बार झाड़ना चाहिए।

११. सर्प-विष—(१) प्राकुरा, भकुरा, वक्षनाग, कनइल, करियारी। ई पाँचौ लै गङ्ग पसारी। सातौ गङ्ग के अतरे, चरै कपिला गाइ। सो विष निजावै पारवती, सो निरविष होइ जाय। दोहाई ईश्वर महादेव

की । दोहाई गौरा पारवती की । पलाश को लासा स्ववावै, न मरै । पुनः काली बरियारा की जड़ प्यावै, विष उतरे जरूर । रोम - रोम से उतरि विष आउ ।

(२) हे अन्धर मन्द हरिया ! साँप के करिया दाँत, अरुण के भाई गरुण ने खाई ।

उक्त मन्त्र पढ़कर सर्प-दश की सूचना देनेवाले व्यक्ति को थप्पड़ मारे; तो सर्प-विष शान्त हो जाता है ।

(३) श्रीकाल-कूट वत्स-नाग हर-दिमारा शिगिया और हरताल करियारी धतूरा और करिहारी । मीनिया गन्धक विष को नाम धरै महतारी । विष ओढ़ना, विष दशना विष को गन्धा । धार-मार मरे को डङ्का । औरउ विष जाउ पाताल । विष ढोला शवदो हरै, आर का विष कोषा । कपरी जै पाल कि विष रोमोठ होइ जाइ । गौरा पारवती महा-देव की आन ।

उक्त मन्त्र को स्याही से ढोल पर लिखे । फिर लकड़ी से उस ढोल को पीटे । उसकी आवाज सुनते ही सर्प-विष उतर जाता है । जब तक सप-विष न उतरे, ढोल बजाता रहे । बजाते समय ढोल भूमि को न छुए, यह ध्यान रखे ।

१२ अग्नि-काण्ड–(१) अनत-बनत की काठी, सहज-महज की चूल्ह । सीता पोवहि बरा, लक्षमन झोकहि नटी कराही । भठी जूरि होइ जाइ । ईश्वर महादेव की दोहाई । दोहाई लोना चमारिन की ।

(२) तीन तीरी के तेरह राई, मैं सहौं वसुन्धरा माई । आर बाँधौ, धार बाँधौ । डण्डा, लोह न लागै घाउ । गोरखनाथ रक्षा करै, लहि मेरी डीठि । फैले हेम यथा पानी होइ जाय । दोहाई मछन्दर-नाथ की ।

विधि––किसी शुभ दिन इस मन्त्र का १००० जप कर इसे सिद्ध करे । फिर जब आग लगे, तो आग से दूर खड़े होकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए मिट्टी के सात ढेले लगी हुई आग को मारे । आग बुझ जायगी ।

१३. गाय का खँगवा रोग (खुर में कीड़ा)—(१) या काला भैरो अवधूत, कालिका कै पूत ! मैं कक्षु करो, तू मारै बूत । अरे, अरे, लोना चमाइन के पूत ! मैं कक्षु करो, तू मारे बूत । गङ्गा, अजोध्या.

काशी—ये तीनिऊ की वाचा बँधी। माता, पिता, गुरु साखी—इन तीनिऊ वाचा बँधी। आदि-ज्योति, अनन्त-कोटि-वैश्य परम-ज्योति-परमेश्वरी, गङ्गा, जमुना, सरस्वती। तहाँ बैठे गोरख जती। तहाँ बाँधी धर्म की आरी। तहाँ चरै गऊ हमारी। तहाँ आउ न रोग, नर ठैराल, न फूटै खुरी। नन्द बाबा की वाचा पुरी। गोरखनाथ मछन्दर पुरी। अर्जुन की वाचा फुरो। ब्रह्म वाचा, विष्णु वाचा, रुद्र वाचा—इन तीनिऊ वाचा पेलि परै। धोवहनी नाद नरक - कुण्ड परै। गाइ गोहारि, बालक गोहारि, त्रिया गोहारि। कासीदास लागहु, गाइ गोहारि। जगन्नाथ लागहु, गाइ गोहारि। सात बहिन वनसपती—सातौ गाइ गोहारि। चारिहु दिशा के पोरहु लागहि—गाइ गोहारि। तैंतिस कोटि देवता लागहु—गाइ गोहारि। नाग देवता लागहु—गाइ गोहारि। भैरो लागहु—गाइ गोहारि। नारसिंह लागहु—गाइ गोहारि। आदि-ज्योति, अनन्त-कोटि-वैश्य, परम - ज्योति परमेश्वरी लागहु—गाइ गोहारि। देवी पाटन, विन्ध्याचल की भवानी लागहु—गाइ गोहारि। गोरखनाथ, मछन्दरपुरी लागहु—गाइ गोहारि। अर्जुन लागहु—गाइ गोहारि। ढाषू, चरासू लागहु—गाइ गोहारि। जागु बहेली लागहु—गाइ गोहारि। बाघू राउत लागहु—गाइ गोहारि। अता फकीर लागहु—गाइ गोहारि। गाइ गोहारि, त्रिया गोहारि, बालक गोहारि। सात पुत्र, त्रिया चार, प्रारिपि के सातौ हैं चण्डाल। सातौ गाइ मारहि, काटहि, बाटहि, गौ की खुरी चवाहि। जौ कुछ धर्म देवतहि होइ, लागौ—गाइ गोहारि। गाइ गोहारि, त्रिया गोहारि, बालक गोहारि। कासीदास का भुजा, जगन्नाथ का चुना, उरद-भात-वनसपती-करवीर - लावा - दूध - नाग तैंतीस कोटि देवता का होम। क्षवना तपवना भैरवनाथ का। नारसिंह को होम। आदि - ज्योति, अनन्त कोटि वैश्य, परम-ज्योति परमेश्वरी को जाड़रि। देवी पाटन विन्ध्याचल की भवानी को कोसा भराइ कै, ब्राह्मन जेवाइ कै। गोरख-नाथ को दूध, मछन्दरपुरी को दूध, अर्जुन को दूध, ढाषू परासू को दूध। जागू बहेलिया, वाघू राउत को खीर, अता फकीर को खीर। राम-दूत हनुमन्त वीर—जेकर जवने दीन भोग, तेकर तवने दिन पहुँचे। जो कछु धर्म होय, देवतहु लागहु—गाइ गोहारि, त्रिया गोहारि, बालक गोहारि। वकटा कौहिआ, खुर काटन का बाधा. जलदा मारिए।

नसाव वाधि, समुद्र भण्डारी, तो देवतन कर नाम उचारौ। तो देव कै आहुति छाड़ौ। तवन के पायन्ह परै। तब गाइ कर जौ गाहन करवा कै वार चित्तउर कर दोष परै, सब देवता साथ - साथ निकर जाइ। पवन के साथ ले, दिसा क ताकि ले, निकरि अवर माँग न माँगौ। माँगौ माँग न थोर। गाई के खरका, तिसरे वर्ष दे वृक्षवना तपवना तोर।

(२) ऊ परवत ऊपर पहारी गाय। तवने बभने क पहलू नाऊ। पहलू केरे सात पूत। रोका, पोका, खागा, सिआरी, वामा, षुरका, धुरजी। सरफौ दोहाई। पहलू की स्वाहा। दोहाई महादेव की स्वाहा।

'जाउरि' [खीर] और 'सोहारी' पूड़ी की १०८ आहुतियाँ दे। पीड़ित गाय के चारों ओर श्वेत सरसों सात बार छिड़के। इससे गाय की सातों प्रकार की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

(३) ॐ गङ्गा, जमुना और सरस्वती। गउवा चरावै गोरख जती। मुख न आवै, न पाकै खुरी। काँध गुवालिनि, वाचा फुरी। चारि कोनै के निकरि जाव। दोहाई ईश्वर, महादेव, गौरा, पारवती की लाख दोहाई। छोड़ु-छोड़ु, गौवन कै सार। पहिले छोड़ी वीर दुशासन, छोड़ि देव गौवन के सार। दोहाई गौरा पारवती कै।

(४) ॐ गङ्ग जमुन की अतरी, जहाँ बसै गोरखनाथ जती। आवै राल, न फूटै खुरी। गोरखनाथ की वाचा फुरी। दोहाई गोरखनाथ की। दोहाई मछन्दरनाथ की।

'परई' (मिट्टी की प्याली) में दूध लेकर कुशा से झारना चाहिए।

१४. घिनही (हाथ की अँगुली का फोड़ा)--(१) तेल से झारै तेल, ककवा पानी, ककवा पानी पन्थ। दोहाई ईश्वर, महा-देव, गौरा, पारवती की।

'उपरी' (गोबर की कण्डी) सुलगाकर उसके ऊपर 'कोसा' (मिट्टी का प्याला) चढावै। उसमें 'करू' (सरसों का) तेल गर्म करे। एड़ी से

झारे। फिर वही गर्म तेल लगाए, तो 'घिनही' रोग अच्छा हो जायगा।

(२) सर समुद्र गौरा के पार, एक गदही के खाए कुशवार। एक गदही, चर-चर गदही। नौ कोरी, नव गदहा चलैं। राम चलावै रावन चलै, रामचन्द्र के अज्ञा चलै। जहाँ महर बाँधो, बीच लै। चलु, चलु। दोहाई ईश्वर, महादेव, गौरा, पारवती, नोना चमारिन की।

'त्रिशूल' बनाकर उस पर 'पथरी विरई' (पुनर्नवा की जड़) रखकर 'हँसुआ' से झारना चाहिए।

१५. **जमुवा (शिशु रोग-टिटनस)**—आरवास की धनुही, पञ्चन करिए नाग। अरजुन वाण टिकोरि कै, भागु-भागु जमराज। डँड़वारे से भीम पुकारहि, सो बहु बालक भय रखवार। दोहाई ईश्वर, महादेव, गौरा, पारवती की।

मन्त्र पढ़कर झारना चाहिए। भगवान् की कृपा से शिशु का दुःख दूर हो जाता है।

१६. **रक्षा-विधान**—(१) तर धरतो ऊपर अकास। प्राण पीठि, गुरू के पास। राति राखै चन्द्रमा, दिन राखै सूर्य। काल कण्ट भरि-पूर। जहाँ लै जाए मेरी ताड़ो, तहाँ लैं घन होइ जाए चौकी। काल-भैरो की चौकी, महावीर की चौकी, नारसिंह की चौकी। गौरा पार-वती की दोहाई। लोना चमाइन की दोहाई।

उक्त मन्त्र को पढ़कर ताली बजाने से सब प्रकार के भय दूर होकर रक्षा होती है।

(२) जल बाँधौ. थल बाँधौ आपनि काया। तीनि खूंट की धरती बाँधौ, सुमिरो गुरु की दाया। मोके करै, ताके परै। प्राण पिण्ड कै रक्षा नारसिंह तू करह। उलटह नारसिंह पलटै काया। तेह कारन नरसिंह वलामा जाँघ राखै, जग ईश्वरी काया राखै। हनुमान माथ राखै। भैरो एह न मानै, तो महा-माया तू खबरदार। दोहाई नारसिंह की। चउतरा बाँधो, मरी मसानउ बाँधौ। कावरो दक्षिन दिसा डाकिनी बाँधौ। अकास बाँधौ, पताल बाँधौ। बोधौ आपनि काया। तीन खूंट की धरती बाँधौ। सुमिरौ गुरू की दाया। मोके करै, ताके परै। प्राण-पिण्ड कै रक्षा, नारसिंह तू करह। ए हनु एह न मानै, तो महा-माया तू खबरदार। दोहाई नारसिंह की। सरिसो साठी सवर पुराई, नौ सै

जोगनी तेल पेराई। गोरखनाथ कहा, कैसे बाँधा ? डाइन देखा, जैसे विघ्वा खेलु खपरा। विघ्वा संघार है करु। जहाँ पठवौ, तहाँ जाय। वरिआ दोष छानि लै आव। उहाँ कै कमक्षा आनि देखा। ऊ गुरू कै शक्ति, हमारी भक्ति। एहू न मानै, तो महा - माया ! तू खबरदार। दोहाई नारसिंह कै, दोहाई महावीर कै।

(३) अजरि अद्रासन, वज्र केवार। उलटि काल खाहि लै ताहि, जो मोहि पर घालै घाव। ते का मारौ, वज्र के तार।

विधि--किसी भी कार्य को करने के पूर्व उक्त मन्त्र का जप कर ले तो किसी प्रकार का विघ्न या भय नही होता। सब प्रकार से कार्य करनेवाले की रक्षा होती है।

(४) आगे राखौ अग्र ताल। पाछे राखौ क्षेत्रपाल। बाँयें राखौ हनिवन्त वीर। दाहिने राखौ नरसिंह वीर। राति राखौ चन्द्रमा, दिन राखौ सूर्य। सदा राखौ धरता माता। काल कण्टक दूर भागु-भागु, हाकिनी-डाकिनी जहाँ-जहाँ मेरे ताल की शब्द जाइ, तहाँ-तहाँ देह जाइ। वज्र कै केवार। दोहाई नरसिंह की।

विधि--पूर्वोक्त मन्त्र ३ के अनुसार ही इस मन्त्र का भी प्रयोग सब प्रकार की रक्षा हेतु उपयोगी है।

१७ **आसन मन्त्र**--अजर आसन, वज्र केवार, वज्र में बाँधौ दसो दुवार। वज्र के पोद घाले घाउ, उलटि वीर जाहि-कह खाउ। मोरे पिण्डे हरि वशहि देव अनन्त राति। राम जी की रक्षा। हनुमान जी की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

पुनः आसन। ब्रह्मा आसन, इन्द्र आसन बैठि, गुरु-गोविन्द आसन बैठि, व्रता ध्यान होम ब्रह्म ज्ञान। अजर आसन, बजर केवार, आसन बैठे घाले घाउ, उलट काल जाहि खाउ। हृदया हमारो हरि बसै, जामे सिद्धि अनेक। श्रीरामचन्द्र रक्षा करैं। रखवार हनुमन्त वीर। गरे-गरे जञ्जीर। अजर की कोठरी, बजर केवार, ब्रह्मा की कुञ्जी, विष्णु का ताला, घर-पिण्ड की रक्षा करै श्रीहनुमन्त जती। श्रीराम-चन्द्र जी वाली हमारी भक्ति। गुरू को शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

१८ चोर-वशीकरण मन्त्र—नरसिंह पोथी आन न होइ, दोहाई नारसिंह की। विहङ्गम-विहङ्गम स्वाहा। नारसिंह की जो आन होइ। क्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं, द्रीं द्रीं, भ्रीं भ्रीं, त्रीं त्रीं, व्रीं व्रीं, श्रीं श्रीं, क्रीं क्रीं, फ्रीं फ्रीं, ग्रीं ग्रीं, स्त्रीं स्त्रीं, व्रीं व्रीं, प्रीं प्रीं, तहत हय-हय, हस-हस, दह-दह, मह-मह, क्लीं व्रीं द्रीं न्ह्रीं, फ्रीं फ्रीं श्री भ्रीं भ्रीं, प्रीं श्रीं भ्रीं, काकि आका कर प्रहहु। जो किरपा, सो भली। किरपा जो करते हैं, सो भली करते हूहि। दोहाई नारसिंह की।

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर गेहूँ के आटे की गोलियाँ बनाए। तब एक कोरी (नई) हाँडी (घड़ा) में पानी भरे। एक-एक गोली पानी में छोड़े। हाँड़ी के नीचे निम्न मन्त्र लिखकर रखे—'साहू बूड़ै, चोर उतिराय।'

१९ दुष्ट बैरी-निवारक प्रयोग—उलटन्त पलटन्त काया। जागु वीर हनिवन्त आसा। अगम कील कटी, मसान का चूरा। जाती हनिवन्त का वाक। सुर वोना चलय, डाकिनी साकिनी चलय। चेप चलय, चोर चलय। भूत चलय, पिशाच चलय। यन्त्र-मन्त्र चलय, यादव जोगिनी चलय। चक्र-पर-चक्र फिरता रहय। महावीर हनिवन्त साहेब की दोहाई। फिरता रहय देखौ। हनिवन्त तेरी शक्ति। गुरू की भक्ति। फुरो मन्त्र—हनमानौवाच।

ॐ काली काली महा-काली। माथे क्षत्र विराजय। पण्डव काली पल राखय। पाल रानी काली को अहार खराय। राम-दूत अब अजोपम धावत धाय। मैं तोहि पूछौ—'एहि हनिवन्त! सर का गदा केन दिया? माथे में तेल सेन्दुर केन दिया? लुङ्गी का लँगोट केन दिया? सवा मन का रोट केन दिया?'

'सर का गदा राजा रामचन्द्र ने दिया। माथे में तेल सेन्दुर माँ जानकी दिया। लुङ्गी का लँगोट शिव दिया। सवा मन का रोट माता पारवती दिया।'

राम-दूत अयोध्या पथ धावते धाय। सर बाँधौ, घार बाँधौ। कवरू खांड-धार बाँधौ, चलत गोली बाँधौ। उड़त तीर बाँधौ, बोलत आपु के फेरि बाँधौ। अग्नि का तेज बाँधौ, बाय सत करौ। चलत गाड़ी बाँधौ, कुंभार का चाक बाँधौ।

औवा काच राखौ । यन्त्र-मन्त्र दृष्टि, हकार कुञ्जी-तर भए । डीठि मूठी जोगिनी, चक्र-पाद-वज्र हाकरप फटि करि, लङ्कूर झण-कारि मारो । वज्र को डण्डा लै काल मारौ । आकास-गामिनि का चक्र बाँधौ । पाताल पैठि वासुकीनाथौ घनौ, दुष्ट बैरी सँघारौ ।

२०. **चोर पकड़ने का मन्त्र**—वारी की नजरि बाँधौ, पुरुष देस की कामरू विद्या । जहाँ बैठी जाग-जोगिनी । जाग-जोगिनी की बेटी फूलमती । चोरी-मानी च भोगिनी । उत्तर बसै सिंहिनी । दवरि धूप कै विलिषो देसिन्हि, आमुड वारारै होता विहान । पकड़ि मँगावो । दोहाई लोना चमारिन की । दोहाई छत्तीस कोटि देवता की ।

विधि—कार्त्तिक मास की अमावास्या की रात्रि में उक्त 'मन्त्र' को जगाए । रविवार या मङ्गल के दिन चौका दे । मन्त्रोच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ता जाय । चोर की पीठ पर निशान पड़ जायँगे और वह पकड़ा जायगा ।

२१. **झाड़ने-फूँकने का मन्त्र**—ॐ पवन चलै, पानी चलै, इन्द्र का नगर चलै, भीम का गदा चलै, सीता का सत चलै, अर्जुन का बान चलै, महादेव का स्रपर चलै, सिंह चढ़ि देवी चलै, आकास की जोगनी चलै, पाताल कै नाग चलै, ठाकुर का सिंहासन चले । घोरू-घोरू रे अघोरी वीर ! घोरू घोर ही में खाय, घोर ही में पीवै, औ घोरही में अघोरी वीर जीवै । छपन छूरी आगे, छपन छूरी पाछे चलै, ताके बीच में वैजनाथ अघोरी चलै । काहे को चलै, डीठि को चलै, मूठि को चलै, टोना को चलै टमाना को चलै, चोरिआ मसान को चले । हे बन्धु ! एतना काम करिके ल्याव । जो न लेवै तो माया तेरी औ भगिनी बाय कसाई के रक्त मां अस्नान करावै । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

२२. **पुत्र-प्राप्ति का मन्त्र**—ॐ ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, ॐ जूः स्वाहा, ॐ पानीदलं यः स्वाहा ।

विधि—उपर्युक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को पिलाए, तो पुत्र की प्राप्ति होती है ।

२३. **भूत, चोर आदि बाँधने का मन्त्र**—ॐ कार गुरु-गोविन्द को नमस्कार । चलु-चलु, दै सन्तरी बान । चले गज-गण्ड चाल । उड़ै गाउडन्त चाल । बाँधु-बाँधु—

भूत बांधु, प्रेत बाँधु, दानव बाँधु, चोर बाँधु, चोर का तेग बाँधु, ईर बाँधु, पीर बाँधु, इक्षु बाँधु, अगिया बैताल बाँधु, जैएत बाँधु, माता अञ्जनी कै सेज बाँधु, चारि दिसा बाँधु, चारो सेम बाँधु।

जौ से श्री रामचन्द्र कर कारज, सौरे से मेरे काज। सौरे न, तो रामचन्द्र की दोहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। वाचा टारै, तो कुम्भी नरक परै।

विधि–अमावास्या-रात्रि में घी-युक्त गुग्गुल जलाकर मन्त्र जपे।

२४. **सर्व-कार्य-सिद्धि का मन्त्र**––ॐ जागु-जागु, जेहि काजे लगावौं, तेहि काजे लागु। धूप करावौं, धनिद्रा धावै, सेंधा नोन चढ़ा पट लावै। आङ्गद वीर वौवसै कुँवारी वेदना करै, उपकारी।

जागु-जागु-जागु, जेहि काजै लगावौं, तेहि काजे लागु। एकइस इस्त्री मेरे पास आवैं। अनखि आएँ, मेरे वोस्ताद को न मानैं, तो धोबी के कुण्ड में परैं। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि––उक्त मन्त्र का जप मङ्गलवार को आरम्भ करे। एक लख जप १५ दिनों में करें। मङ्गलवार को ही बदरी काष्ठ (बेर की लकड़ी) जलाकर। १ राई, २ धनिया और ३ सेंधा नमक से होम करे। इस मन्त्र के प्रयोग से अभीष्ट कामना पूर्ण होती है।

२५. **कुत्ता काटने का मन्त्र**–(१) वामा, पूत्ती औ सुरियावाँ। आगि लागि, वह तीनिऊ गाया––मदना रे! मोहि कूकुर काटा। दोहाई नारसिंह की।

विधि–कुम्हार के 'चाक' की मिट्टी की तीन गोलियां बनाए। उन्हें उक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे। फिर कुत्ते द्वारा काटे गए व्यक्ति को मन्त्र द्वारा झाड़े।

२६. **रोग-निवारक शाबर मन्त्र**—गल-रोगे, घेघ-रोगे, भूत-रोगे, दृष्टि रोगे––'स् फ् ट् लक्षूं स्वाहा'––इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर मोर-पङ्ख से उस वस्तु को झाड़े, जिसे रोगी बड़े चाव के साथ खाता हो। झाड़ने के बाद उस भोज्य वस्तु को चौराहे पर रख आए। इस प्रयोग से रोगी-रोग से मुक्त होकर स्वस्थ हो जाएगा।

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६